सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - कोरोना

Vibrant Pushti

" जय श्री कृष्ण "

"दूसरा दिन "

मेरे प्रभु ! तु है कमाल !

मेरे जीवन के संगीन दिन !

संस्कार संस्कृति धरोहर माता

धरे आशीर्वाद हर हर जीवन

जय भवानी जय अंबे माता !

करें रखेवाली साथ साथ रह

पकायें अन्न साथ साथ खल

सिंचन सिंचन भव रोग भगाये

नित नूतन उत्साह जगाये

जय भवानी जय शिवानी

पल पल ख्याल घट घट न्याल

नित स्मरण हर घडी निहाल

तुझसे जुडे भव भव रवानी

चरण शरण आनंद जगाय

जय भवानी जय शिवानी

हे अंबे माँ ! सत श्री अकाल

" Vibrant Pushti "

" तिसरा दिन "

सूरज उगेगा सिर्फ हमारे लिए

किरणों फैलायेगा सिर्फ हमारे लिए

प्रकाश स्पर्शायेगा सिर्फ हमारे लिए

शक्ति वर्धन करेगा सिर्फ हमारे लिए

सृष्टि नव चेतन भरेगा सिर्फ हमारे लिए

उन्हें पता है हम कैसे है !

उन्हें पता है हमें क्या चाहिए !

उन्हें पता है हममें परिवर्तन करना है !

वह अकेला

बस ! यही नव निर्माण हममें जगाना है

बस ! यही कर्म निष्ठा हममें जगानी है

हे मित्रों ! जैसे सूरज हर रोज नया सवेरा लाता है

ऐसे

हमारा भी नया सवेरा हमारी एकता से उठेगा

आज ही उठेगा हमारा नूतन सूरज

आज ही मारेगा हमारा जीवन दुश्मन

हम संकल्प बद्‌ध हो

हम संयम नियामक हो

न कोई घर से बाहर जायेगा

न कोई घर में अंदर आयेगा

मारे कोरोना तुटे कोरोना

मिटे कोरोना नष्टे कोरोना

अचूक आयेंगे हमारे खुशी के दिन

अचूक आयेंगे हमारे जीने के दिन

अचूक आयेंगे हमारे हंसी के दिन

अचूक आयेंगे हमारे स्वप्नों के दिन

अचूक आयेंगे हमारे तंदुरुस्त के दिन

द्रढ बनो द्रढ रहो

गाते जाये खेलते जाये

सबको खुशी लुटाते जाये

" Vibrant Pushti "

" चौथा दिन "

हमने शिव पुराण गायें

हमने हनुमान चालीसा गाई

हमने कहीं प्रार्थना पाठ किये

हमने कहीं धर्म अनुष्ठान किये

हमने कहीं मंत्र जाप किये

हमने कुटुंब में रह कर न कोई गलत किया

हमने साथ साथ रह कर न कोई बूरा किया

न किसीको हैरान किया

न किसीको परेशान किया

न किसीका हक्क छीना

पडोसी के साथ भी प्रेम भरा व्यवहार

मित्रों के साथ भी दोस्ती भरा व्यवहार

कोई दुश्मन के साथ भी ऐक्य भरा व्यवहार

और आखिर

ईश्वर के साथ भी सेवक भरा व्यवहार

अब कोरोना आये

अब चीन आये

अब पाकिस्तान आये

तो हम मार सकेंगे

तो हम जीत सकेंगे

तो हम नष्ट करेंगे

यही ही है मानवता

यही ही है सेवकता

यही ही है धर्मता

यही ही है कर्मता

यही ही है समर्पणता

एक ही संकल्प

एक ही संयम

यही ही है श्रेष्ठ संस्कृति

यही ही है पवित्र संस्कार

" Vibrant Pushti "

" मित्रों "

माननीय प्रधान सेवक ने हमें सर्वे को विनंती करी है - देश की सेवा और सुरक्षा के लिए।

श्री प्रधान सेवक जी !

आप जैसे सेवक है, वैसे हम भी यही देश के सेवक है। आप हमारे लिए जो पुरुषार्थ कर रहे हो, हमें भी पुरुषार्थ करना है। आज आपने हमें जो यह मौका दिया है, यह मौका हम सर्वे अचूक निभाना चाहते है। हम सर्वे आपकी गुंजाइश का अवश्य स्वीकार करते है। हम आपके निर्देश किये बेंक खाता में अचूक हमारा साथ निभायेंगे। " जय हिंद " " प्रणाम "

" Vibrant Pushti "

" छठ्ठा दिन "

श्री श्याम सुंदर श्री यमुने महाराणी की जय

हे यमुनाजी !

आप समस्त दूरित का क्षय करने वाली हो

आप सकल सिद्धि अर्पित करने वाली हो

आप हम जो जगत में है वह जगत से जागृत स्वभाव पर विजय कराने वाली हो

हम आपके पुत्र अर्थात सूत होने के नाते - सदा आप के गुणधर्मो से ही सिंचित है - **तव चरित्रमत्यद्भुतं**

हम सदा आपके शरण में है - **सदा तनु नवत्व संन्निधौ**

हम सदा आपकी स्तुति करते है - **हरैय दनुसेवया भवति सौख्यमामोक्षत**

हम सदा पुष्टि पुरुषार्थ में है, जो जो श्रमबिंदु उदभवते है, जिन्हें आपके चरण में सदा न्योछावर करते है

हम सदा पुष्टि पुरुषार्थ करते है - **" कृपा जलधिसंश्रिते मम मन सुखं भावय "**

आपका पय पान

आपका जल पान

आपका पुष्टि पान

यही ही हमारी धात्री

" Vibrant Pushti "

" नूतन मास " नया महीना " नव समय "

संकल्प - संयम - विश्वास से हम तय करे

हमें स्वस्थ रहना है

हमें श्रेष्ठ रहना है

हमें शुद्ध रहना है

हमारे जीवन से

कहीं रमत खेले कोई

कहीं कोशिश करे कोई

कहीं बेवकूफ़ बनाये कोई

चाहे मजहब से खेले

चाहे बायोटेक वायरस से करे

चाहे झूठे संबंध से बनाये

हम है आध्यात्मिक धरा के पुत्र

हम हमारी प्रार्थना से

हम हमारी तपश्चर्या से

हम हमारी सेवा से

खेलने वाले को हरायेंगे

कोशिश करने वाले को भगायेंगे

झूठे संबंध वाले को तोडेंगे

घर घर से ऐसी आग प्रकटेगी

एक एक से ऐसी देश दाझ निकलेगी

हर हर से ऐसी आह जलेगी

न दुश्मन रहेगा

न वायरस रहेगा

न झूठ रहेगा

हमारे श्री गुरुदेव ने हमें सिंचा है

हमारे श्री माता पिता ने हमें संस्कारा है

हमारे श्री कुटुंब ने हमें संवारा है

न घर में घुसने देंगे

न घर से निकलेंगे

न घर में छुपायेंगे

है हिम्मत है वतन की

है विश्वास है संस्कार की

है जागृतता है एकता की

" जय हिंद " " वंदेमातरम "

"Vibrant Pushti "

" राम नवमी "

राम नवमी की शुभकामनाएं

प्रथम दिन

दूजा दिन

तृतीय दिन

चतुर्थ दिन

पंचम दिन

षष्ठी दिन

सपत्म दिन

अष्टम दिन

और

नवम दिन

हमने शिक्षा ग्रहण की है

हमने संस्कार सिंचन किये है

हमने संस्कृति अपनायी है

यही शिक्षा हमें शिक्षित करती है

जो शिक्षा में

प्रथम दिन अर्थात प्राथमिकता

दूजा दिन अर्थात पूजा

तृतीय दिन अर्थात तर्पण दिन

चतुर्थ दिन अर्थात प्रस्थान चतुष्टयी

पंचम दिन अर्थात पंच तत्व नवत्व

षष्ठी दिन अर्थात षष्ठ व्याकरण विद्या

सप्तम दिन अर्थात सप्त वचनम्

अष्टमी दिन अर्थात अष्ट सिद्धि

तब ही हममें भक्ति जागृत होती है,

भक्ति से भगवान अवतार धरते है

हम शरीर अयोध्या होता है

राम नवमी अर्थात हममें राम प्राकट्य होता है

यही ही राम शासन है

यही ही राम अनुशासन है

यही ही राम - यही ही धाम - यही ही धर्म है - यही ही पुरुषार्थ है।

राम बनो - राम धरो - राम करो

राम नवमी का यही ही सातत्य है

" Vibrant Pushti "

गहरी बात कर रहा हूँ

हमारे करोडो देशवासियों

हर देशवासियों हर एक नेताओं की बात सुने

तो क्या होता है

कोई पूरब तो कोई पश्चिम

कोई उत्तर तो कोई दक्षिण

कोई ये करें तो कोई वो करें

आज यही हाल है हमारा

मौलवी - अपनी सुनायें

महाराज - अपनी सुनायें

मंत्री - अपनी सुनायें

तंत्री - अपनी सुनायें

खबरपत्री - अपनी सुनायें

मुखिया - अपनी सुनायें

हम भुगतते है - जो जो होता है

पर

हम एक ही योग्य व्यक्तित्व की सुने तो - जो निष्पक्ष हे - निरपेक्ष है - सर्वोदय है - सर्वोपरी है

तो न कहीं

बस सही ही सही

और

जो करी ही करी

बस भलाई ही भलाई

वो है हमारे प्रमुख सेवक

जो प्रजा के प्रमुख सेवक सेवावर्य

तो प्रजा सुखकारी - निरोगीधारी

हम भी उनके साथ वो भी हमारे साथ

भागे दुश्मन धार धार नष्ट पामे हार हार

" Vibrant Pushti "

एक दीपक हम से प्रकटाय

हम से सेवा की ज्योत जगाय

एक तिनका प्रचंड ज्वाला हो जाय

वायरस तो क्या हर अंधकार नष्ट हो जाय

शुद्धता उठे जीवन में बसे पवित्रता मन में

हर कोई मित्र अपने हर कोई चमन में अपने

खिलेगा गुलशन हर हर आंगन

मिटेगा दुश्मन हर एक के दामन

मेरे दीपक से झगमगाई दुनिया

घर घर समाई आनंद उर्मिया

प्रज्वलित किया है सारा जहां

जागा भारत हारा दुश्मन हर नाकाम पर

साथ साथ रहने का यही परिणाम

साथ साथ निभाने का श्रेष्ठ विराम

" Vibrant Pushti "

" वैष्णवमार्गीय पुष्टि जन "

रात नव बजे - नव मिनिट तक हमें दीपक प्रकटाना है - नव मिनिट में 3 बार श्री यमुनाष्टकम् का स्मरण और मूल गायत्री मंत्र का हम पठन करेंगे ।

" Vibrant Pushti "

"दीप प्राकट्य "

हे देश भक्तों !

अभिनंदन ! अभिनंदन ! अभिनंदन !

सच ! हमने हमारी एकता प्रज्वलित कर दि

सच ! हमने हमारी मातृभूमि को वंदन किया

सच ! हमने हमारी नेतृत्व पर विश्वास किया

सच ! हमने हमारी संस्कृति को उजागर किया

सच ! हमने हमारा हिन्दुत्व को प्रणाम किया

सच ! हमने हमारा साथ देशवासियों से निभाया

सच ! हमने हमारा गौरव सारे जगत को सीखाया

सच ! हमने दुश्मन व्यापी कोरोना को हराया

सच ! जगत नियंता ने हमारी प्रार्थना सुनी

सच ! हर हर चिकित्सक सेवा को सलाम

सदा साथ - सदा एक - सदा न्योछावर

" Vibrant Pushti "

" सतयुग "

मानव ! कुछ अपने आप में उजागर कर रहा है

सच ही समजना

सच ही कहना

सच ही करना

सच ही समझाना

सच ही करवाना

घर में साथ साथ रहते है

सब कुछ निभाते है

न कोई द्वेष

न कोई वेर

न कोई घृणा

न कोई तृष्णा

न कोई आक्रोश

न कोई विरोध

न कोई क्रोध

न कोई लोभ

न कोई नकारात्मकता

सच ! यही एक सीडी है

अपने आप को योग्यता पाठवने की

अपने आप में योग्यता घडने की

अपने आप में योग्यता पाने की

आओ सब मिलकर एक ऐसा राष्ट्र निर्माण करे

जिसमें न वैर हो

जिसमें न राग हो

जिसमें न व्याधि हो

जिसमें न आधि हो

जिसमें न विरोधी हो

जिसमें न अपराधी हो

" जय हिंद "

" Vibrant Pushti "

"कहां है हम "

बचपन से युवा

युवा से पुरुषार्थी

पुरुषार्थी से आधेड

आधेड से बुढापा

बुढापा से आखिरी उम्र

दिन बीतते बीतते साल बीत गए

साल बीतते बीतते दशक बीत गया

दशक बीतते बीतते पचपन बीत गए

पचपन बीतते बीतते शतक बीत गए

क्या कर के बीता रहे है

क्या कर के गुजर रहे है

शिक्षा

पैसा

बंगला गाडी

जर झवेरात

माल मिलकत

नाम शोहरत

अरे ! यह तो बाहरी बाहर है

मेरे लिए - मेरे अपने लिए क्या किया?

मेरे पास - मेरे अंतर के लिए क्या किया?

दर्शन जाता था

भजन गाता था

प्रवचन सुनता था

रामायण भागवत कथा में जाता था

श्री मद् गीता पढता था

परिक्रमा करता था

ओहह ! क्या पाया?

इन्हें कहा मेरे विचार

उन्हें कहा मेरा अध्ययन

यह जानता हूँ

यह मानता हूँ

यह अपनाया है

यही सत्य है

तो यह औषधि क्यूँ?

तो यह दोड भाग क्यूँ?

तो यह मुख पर ग्लानि क्यूँ?

तो यह मन में उचाट क्यूँ?

तो यह तन में थकावट क्यूँ?

क्यूँकि

न सही समझा - न सही पाया

न सही किया - न सही अपनाया

न सही जीवन अर्थ किया

न सही पुरुषार्थ जगाया

बस चलते चले औरों की तरह

बस फिरते रहे दुनिया की तरह

बस घिसटते रहे जीवों की तरह

बस करते रहे पशुओं की तरह

सोच लो ! जाग लो ! संभल लो !

" Vibrant Pushti "

"कोरोना "

हमारा मन कितना असमर्थ है की हम तटस्थता से योग्य निर्णय नही कर सकते है।

घर पर रहे तो बाहर का विचार

बाहर रहे तो घर का विचार

पैसा कमाना है

पैसा देना है

पैसा लेना है

सिर्फ यही ही बातें

मित्र ! जीवन जो जी रहे है

उनमें घर, माता पिता, भाई बहन, पत्नी पुत्र पुत्री भी अभिन्न अंग है जो पैसा से अमूल्य है।

जीना है तो पैसा चाहिए

जीना है तो कुटुंब अवश्य चाहिए

शांत मन करने का यह अनोखे दिन है

संयम और निसंशय होने का अमूल्य समय है

जीते जीते तो ऐसे कितने ही गुजर गये - जैसे जीते थे

नूतन होना है

स्थिर होना है

योग्य होना है

बहोतो की बात सुनी

अब अपने शांत और स्थिर मन को सुनने की कोशिश करें

न रोग आयेगा न मन चंचल रहेगा

ये करु वो करु तो न कुछ कर पायेंगे

अब द्रड़ता से करुंगा श्रेष्ठ करुंगा

यही तो जीवन है

इसलिए तो मैं हूँ।

न कभी आयेगा कोरोना

न दहशत फैलायेगा कोरोना

न डरायेगा कोरोना

यही ही तो मनुष्य होने का गर्व है

" Vibrant Pushti "

" શ્રી વલ્લભાચાર્યજી " પ્રાકટ્ય મહોત્સવ અંતર્ગત વિનંતી

પુષ્ટિ ધર્મ ધારણ જન

કોરોના તો શું જગતમાં ઉદભવતો કોઈ પણ રોગને નષ્ટ કરીને સાબિત કરી આપીએ - અમે શ્રી વલ્લભાચાર્યજી નાં અનુયાયી છીએ

શ્રી વલ્લભાચાર્યજી સિદ્ધાંતો આધારિત આપણે આપણાં જીવનને મધુર કરવાની કોશિશ કરતા રહીએ છીએ.

આ સિદ્ધાંતો આધારિત જ આપણે સર્વે કાર્ય હાથ ધરીએ

1. અપરસ ને સમજીએ અપરસમાં રહીએ

2. અન્ન પકાવવું પ્રભુ સમર્પિત ધરીએ

3. યોગ્ય નફા વ્યવહારમાં જ અર્થોપાર્જન કરવું અને સેવા ભાવ અપનાવવો

4. સર્વે સાથે શુદ્ધ, વિશ્વાસ અને નિખાલસ પૂર્વક જીવન જીવી જાણીએ

5. 84 વૈષ્ણવ - 252 વૈષ્ણવ નું જીવન ચરિત્ર ની અસર આપણાં જીવનમાં મહેકાવવી જોઈએ

6. ખૂબજ વિચારો મંતવ્યો બોલ્યા પણ પોતે અપનાવીને પ્રમાણિત કરીએ

7. ઘણી વખત સાંભળ્યું - ચાલ્યા જવાનું છે બધું છોડીને

તો તન મન ધન અને જીવનને સુધારવાનો સંકલ્પ કરી પ્રતિજ્ઞા કરીએ

" હું પુષ્ટિ માર્ગ અનુયાયી સદા શ્રી વલ્લભાચાર્યજી નાં અનુસંધાન અને અનુસાર જીવન જીવવા કટિબદ્ધ છું "
આ જ મારી શરણાગતિ

" Vibrant Pushti "

"कर्म का सिद्धांत "

हम यह उम्र पर पहुंचे

हमने श्री गुरुजी से कुछ समझ पाये

हमने कहीं शास्त्र समझ कर कुछ समझ पाये

हमने धर्म धारण करके कुछ समझ पाये

हमने विद्या पा कर कुछ समझ पाये

हमने संस्कार अपना कर कुछ समझ पाये

हमने संस्कृति की सिद्धता से कुछ समझ पाये

हमने हमारा जीवन यथार्थ करके कुछ समझ पाये

चारों ओर जो फैलता है क्या हमारी करणी का फल है?

हम किस निश्चय से दोड रहे है और दौडा रहे है?

हम किस संबंध से जुडते है और जोड रहे है?

हम किस बंधन से बंधते है और बंधाते रहते है?

हम क्या सत्य समझें?

जन्म धरा है - जीना है !

नही नही

गहराई से अध्ययन करे

शायद कुछ समझ में आये

" Vibrant Pushti "

"अकेले नही पर एकांत "

आज के युग के अध्ययन दिनों

हममें एकता - समानता - सामूहिकता - जुटता - न्यायायिक्ता - निकटता समझाई

वायरस

मित्रों !

झांखा हमने हमारी संस्कृति को

पलटाये पन्ने अपने शास्त्रों का

स्मरण किया अपने पूर्वजों को

सुश्रुषा करते थे अपने अन्न पकाने के व्यंजनों से - मसालों से

नीति घडते थे उत्सवों और धार्मिक तिथि और ऋतुओं से

न कभी वायु बिगडे

न कभी जल बिगडे

न कभी धान्य बिगडे

न कभी वनस्पति बिगडे

न कभी मन बिगडे

न कभी तन बिगडे

न कभी व्यवहार बिगडे

तो कैसे व्याधि पकडे

तो कैसे जीवन बिगडे

जीवन बिगडा

यह सब छोडने से

आदि की रीत अपनाने से

अंधश्रद्धा में डूबने से

दूसरे की नजर से देखने से

यही ही है एकांत

जिसने हमें जगाया

जो जाग गये वह जीत गये

" Vibrant Pushti "

" धर्म "

अनेकों ने व्याख्या की है **" धर्म अर्थात योग्य सिद्धांतों को धरना "**

अनेकों ने अर्थ किया है **" धर्म अर्थात एक सैद्धांतिक संप्रदाय को अपनाना "**

अनेकों ने समझा है **" धर्म अर्थात जो कुटुंब में जन्म धरा वह कुटुंब का अपनाया धर्म से बंधना "**

अनेकों ने अपनाया है **" धर्म अर्थात जो खुद के मन, धन और जीवन शैली में सैद्धांतिक हेतु सिद्ध करने अपनाना "**

आदि आदि और आदि

क्यूँकि हरेक के मान्यता आधारित धर्म की अनेकों व्याख्या हो जाती है - किसे कबूल करे या सही समझे वह हरेक के मन और वास्तविक जीवन से है।

पर

सनातन धर्म अर्थात वैदिक ज्ञान आधारित धर्म का अर्थ सूक्ष्म और अध्ययन के गहराई भरा है।

" धर्म "

जो भजन, अर्चन, तप, ज्ञान, भक्ति, पूजन, यर्जन करने की भूमिका को योग्य करने का कार्य अर्थात जो आध्यात्मिक अंतकरण का निर्माण हमें योग्यता की ओर बढाये, हमें श्रेष्ठतम प्रदान करने में सफल आयोजन कराएं इन्हें पुरुषार्थ कहते है जो भगवद् सिद्धि परम सिद्धि के पथ का निर्माण करे। यह परम सिद्धि भगवद् सिद्धि में परम बल परम उर्जा, परम अंकुश, परम अनुशासन गुल जाये - जो केवल परम आनंद ही जगाता है - इसे धर्म कहते है।

" Vibrant Pushti "

"श्री वल्लभाचार्यजी प्राकट्य दिन "

वंदन करे

नमन करे

करे श्री वल्लभ को प्रणाम

पुष्टि भाव जगाया

पुष्टि भक्ति जगाई

जगाया पुष्टि उर्जा ज्ञान

क्षण क्षण स्मरुं

क्षण क्षण भजुं

क्षण क्षण संवारु षोडश संस्कार

गोवर्धन परिक्रमाया

यमुना पान कराया

रज रज चौरासी कोष स्पर्शाई

पुष्टि सेवा

पुष्टि दर्शन

कीर्तन कीर्तन पुष्टि रंग बिखराई

मेरे वल्लभ

तेरे वल्लभ

घट घट हममें पुष्टि सिद्धांत दर्शाई

हाँ वल्लभ!

मेरो तो आधार श्री वल्लभ के चरणाविंद

मेरो तो आचार श्री वल्लभ के ब्रह्मसंबंधविंद

मेरो तो साकार श्री वल्लभ के

श्री नाथजी

मेरो तो जन्म द्‌वार श्री वल्लभ के **" श्री कृष्ण शरणं मम: "**

मेरो तो जीवन प्राण श्री वल्लभ के **" जय श्री कृष्ण "**

" Vibrant Pushti "

हसना चोक्कस है

हसने से हम प्रफुल्लित होते है

यह हसना है क्या?

१. दूसरे की मूर्खता पर हसना

२. दूसरे की अदा पर हसना

३. अपनी काबिलियत पर हसना

४. अपनी मुश्किलों पर हसना

५. अपनी गलतियों पर हसना

६. किसीकी मासूमियत पर हसना

७. किसीकी अहवेलना पर हसना

८. कोई परिस्थिति पर हसना

९. अपने आरोग्य के लिए हसना

आदि आदि

हसो अचूक हसो

हसना तो कली है गुलशन की

हसना तो प्रथम चरण है खुशी का

हसना तो आनंद है अपनी आंतरिकता का

जो हसे वो ही सब के दिल में बसे

हमें अचूक हसते रहना ही है

अपने गौरव पर

अपने कदम पर

अपने निर्णय पर

अपने सन्मान पर

अपने कार्य पर

अपने विश्वास पर

अपने विकास पर

अपनी सार्थकता पर

अपनी सहजता पर

अपनी सरलता पर

अपनी महानता पर

अपनी निष्ठा पर

यह हंसी सदा की है

यह हंसी समृद्धि की है

यह हंसी आनंद की है

" Vibrant Pushti "

" पाप "

क्या समझते है हम यह पाप को

गौर से कहते है

जोर से कहते है

गूँज से कहते है

शोर से कहते है

बार बार कहते है

पलट पलट कर कहते है

पापी है पापी है पापी है

हमने यह पंक्ति सुनी भी है और पढी भी है

" जिसने पाप न किया हो वह पहले पत्थर मारे "

क्या हुआ?

पाप करने वाले को समझना

पाप कराने वाले को समझना

पाप के विचार करने वाले को समझना

पाप के साथ देने वाले को समझना

धैर्य से सोचना

रावण पापी था?

कंस पापी था?

दुर्योधन पापी था?

अंगुलीमाल लुटारु पापी था?

वाल्मीकि ऋषि जो पहले लुटारु थे तो पापी थे?

अहल्या पापी थी?

बलिराजा पापी थे?

हिरण्यकश्यप पापी था?

वृतासुर पापी था?

इन्द्र पापी था?

आदि कहीं........

कौन थे पापी?

कौन है पापी?

सतयुग - त्रेतायुग - द्वापरयुग - कलयुग

पाप की व्याख्या समझना अति आवश्यक है

आज के समय - काल और युग से समझे तो पापी कौन?

कुटुंब कुटुंब से समझे

स्थली स्थली से समझे

" Vibrant Pushti "

" आरंभ - अंत "

" उत्स - अवसान "

" उगना - ढलना "

" अंकुर - निर्मूळ "

" सर्जन - विसर्जन "

" व्यापन - समापन "

" जन्म - मृत्यु "

" प्रारंभ - पूर्ण "

" प्रकट - एकात्म "

कितनी अदभुत शैली है

जो आरंभ होता है उसका अंत होता है

जो उत्स होता है उसका अवसान होता है

जो उगता है उसका ढलना होता है

जो अंकुर होते है उसका निर्मूल होता है

जो सर्जन होते है उसका विसर्जन होता है

जो व्यापन होते है उसका समापन होता है

जो जन्मा है उसका मृत्यु है

जो प्रारंभ होते है उसका पूर्णता है

जो प्रकट होते है उसका एकात्मता होता है

हम मनुष्य - हम ही सोचे कि हमारा

आरंभ हुआ है तो अंत है

उत्स हुआ है तो अवसान है

उगे है तो ढलना है

अंकुरित है तो निर्मूल है

सर्जन है तो विसर्जन है

व्यापन है तो समापन है

जन्म है तो मृत्यु है

प्रारंभ है तो पूर्ण है

प्रकट है तो एकात्म है

यह अवस्था हमारे पुरुषार्थ से निश्चित होती है

यह अवस्था केवल मनुष्य ही पा सकते है

अब तय करें हमारी अवस्था क्या है?

" Vibrant Pushti "

"दीपक " फूल माला " धूपबत्ती "

"फल प्रसाद "

क्या समझते है हम इनके बारे में

पूजा का सामान !

नही नही !

जैसे हम कोई पूजन, यज्ञ या सेवा का संकल्प करते है, धीरे धीरे उन्हें पूर्णता की ओर आगे बढते है - और आखिर पूर्ण, समाहार, समापन, अविष्ट, सिद्ध करते है।

तब यही ही पदार्थ जो प्रारंभिक में नूतन थे

जैसे दीपक - जो सूत और घी के मिश्रण से अंगित किया

जैसे फूलमाला - जो पैड से तोड कर सूत के धागों में पिरोया

जैसे धूपबत्ती - जो कहीं सुगंधित पदार्थों को एकत्रित करके एक वांस की कांटी से निर्मित किया

जैसे फल प्रसाद - जो पैड से तोड कर साफ सुधरे कर छोटे छोटे टुकडे कर भोग लगाया

या अन्न को पीसकर उनमें कहीं प्रकार के सुगंधित और सुका मेवा मिश्रित करके एक रुप पकाया

क्या समझते है हम इन्हें?

केवल पूजा का सामान !

नही नही! यह निर्माल्य है - श्रेष्ठ है, पवित्र है, शुद्ध है।

चाहे दीपक अपने आपको जलाकर लुप्त हो गया

चाहे फूल अपने आप को सूई की नोक से छेद होने के बाद धागा में पिरोया

चाहे धूपबत्ती अपने को मिटाकर सुंगधित महक प्रसारा

चाहे फल अपने को कटा कर छोटे छोटे टुकडे करवाया

चाहे अन्न ने अपने आपको एक रस दधि करके चूले पर पकाया

पूजा में अपने आपको गुल दिया

और पूर्णता पायी, समाहार पाया, समापन पायी, अविष्टिता पायी, सिद्ध पाया।

यह उनके लिए श्रेष्ठतम यज्ञ है, सेवा है, समर्पण है। जो निर्माल्य है।

जैसे अपने माता पिता जो निर्माल्य है, जिन्होंने हमारी खातिर अपने आपको समर्पित कर दिया।जो श्रेष्ठ है, जो पवित्र है, शुद्ध है, जो वंदनीय है, पूजनीय है, सेव्य है।

हम युवान हुए, नूतन हुए जैसे वही दीपक, फूलमाला, धूपबत्ती और फल प्रसाद की तरह ।

यही तो श्रेष्ठता है हमारी वैदिक संस्कृति की - संस्कार की - सेवा की - जीवन की

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

हमें खुश रहना है

हमें सुखी रहना है

हमें कुशल रहना है

हमें रुचित रहना है

हमें सुंदर रहना है

हमें अभय रहना है

हमें सलामत रहना है

हमें विकसित रहना है

हमें आध्यात्मिक रहना है

हमें शांति से रहना है

हमें आनंदित रहना है

हाँ ! यही तो हमारा मूल उद्देश्य है

हाँ ! यही तो हमारी मनुष्यता है

अचूक पा सकते है

तो हमें छोडना पडेगा

" संशयता - संदेहता - भ्रमता - असमंजसता - द्वंदता - अज्ञानता - मूढता - हठता - जिद्दता - शून्यता - रिक्तता "

क्या कह रहे हो?

हाँ! सुबह नैन खुलते ही यह सर्वे ने हमें घेर के रखा है

हाँ! सुबह उठते ही यह सर्वे ने हमें बांध कर रखा है

हाँ! सुबह जागते ही यह सर्वे ने हमें समझा कर तैयार रखा है

हम जो कुछ भी करे उनकी पाबंदी से जुड कर ही करे

यही ही हमारा ज्ञान है - भाव है।

हम जीते रहते है - करते रहते है।

यही हमें न खुशी, न सुखी, न कुशल, न रुचित, न सुंदर, न अभय - न सलामत - न विकसित, न आध्यात्मिक - न शांति - न आनंदित प्रदान करता है।

यह सर्वे को हमें नष्ट करना है, क्या पुरुषार्थ है जो हम इन्हें मार सके?

केवल और केवल एक ही धर्म है इन्हें नष्ट और मारने का अपने आप में विश्वास जगावो।

इन्हें नष्ट करे सरलता से

इसका नाश करे सहजता से

इन्हें नष्ट करे योग्य सिद्धांतों से

इसका नाश करे योग्य शिक्षा से

इन्हें नष्ट करे श्रेष्ठतम सेवा से

इसका नाश करे मधुरता से

इन्हें नष्ट करे निखालसता से

इसका नाश करे शिष्टता से

अपनी संयमता अपनी समय सूचकता

अपनी नीति अपनी रीति

मार सके हर दुश्मन को

नष्ट कर सके हर दूषण को

" Vibrant Pushti "
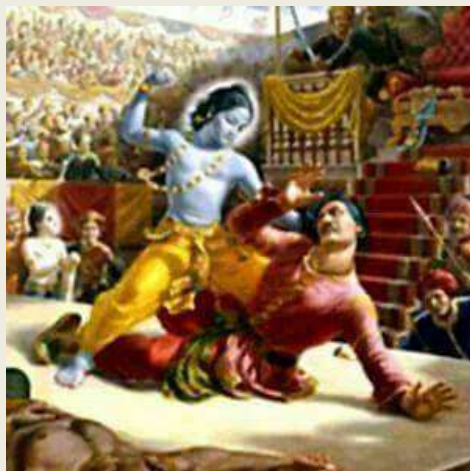
હું વારંવાર વિચારું છું
મારી ઉંમર થઈ ગઈ
નહીં તો હું
આ કરી શક્યો હોત
આમ કરી શક્યો હોત
તેમ કરી શક્યો હોત
અને યોગ્યતા પાર પાડતે જ
મિત્ર
કરવું હોય તો કોઈ પણ ઉંમરે કરી શકીએ છીએ
1. આપણી સંસ્કૃતિ ના વેગવંતા ચરિત્રો બધા 60 વર્ષ ઉંમર પછીનાં જ હતા
2. આજે પણ આપણું ભૌતિક જગત ચલાવનાર 60 વર્ષ પછીનાં જ છે
3. યોગ્ય માર્ગદર્શન બાળપણમાં નથી પામ્યા પણ આજે અનુભવો પછી તો યોગ્યતા નક્કી કરી કૌટુંબિક સંબંધો અને રીત ભાતમાં તો શિક્ષિત કરી શકાય જ છે.
આપણે પોતે ડસ્ડબીન બની જઈએ અથવા બનાવે તે તો આપણી અણઘડતા જ છે.
ધૈર્ય થી વિચારો
સમાજ સેવાનું કામ કરતાં કૌટુંબિક ઉત્થાન નું કામ વધુ શ્રેષ્ઠ છે.
વિચારો અને ગોઠવો
બધો જ રોગ નિકળી જશે
બધી દવાઓ છૂટી જશે
એક કુટુંબ શ્રેષ્ઠ કુટુંબ થઇ જશે
તો સમાજ સમૃદ્ધ થઇ જશે
" Vibrant Pushti "

किसने बांधा है हमें
किसने हुकम से रखा है हमें

न कोई बांध सकते है हमें

न कोई हुकम कर सकते है हमें

अगर

जो हमने न अपनाये होते चाइनीज टोईझे

जो हमने न खाये होते चाइनीज खुराकें

खेले चाइनीज टोईझे

खायें चाइनीज खुराकें

तो खुद बंधे हो अपने आप से

तो खुद हुकम करते हो अपने आप से

कितने सालों गुलाम रहे अंग्रेजों के

कुछ तो सीखों ऐसे अनुभवों से

" Vibrant Pushti "

" मित्रो "

हम हिन्दु संस्कृति अपनाने वाले

हम सदा पुरुषार्थ करने वाले

जब राजा परीक्षित के पास कलयुग आया और उनसे प्रार्थना करने लगा - हे राजन मुझे नष्ट न करो।

सोचें कि कितना महान होगा राजा जो साक्षात कलयुग उन्हें विनंती करता है।

मित्रो

हम भी यही धरती और संस्कार के संतान है

आज हमारे सामने एक दुष्ट वायरस आया है।

हमें उन्हें नष्ट करना है - तो कैसे करें?

कलयुग जब आया सामने तो राजा अकेला था

वायरस भी सामने आया है तो हम अकेले है

राजा ने उन्हें अपने से इतना दूर कर दिया - जो पास भटका नही

हम भी दूर रह कर नष्ट करेंगे

यह नष्ट हम हमारे श्रेष्ठ पूर्वज के पुरुषार्थ को अपना कर - समझ कर करेंगे

यह राजा का पुरुषार्थ था -

मन - तन - धन से पवित्र था

शिक्षा - संस्कार से सुशील था

निष्ठा - चरित्र से शुद्ध था

भक्त - निष्कपट से धैर्यवान था

दया - निसंदेह - निसंशय शिष्टाचारी था

नीति - अद्वैती से न्यायी था

कलयूग उनसे हार गया

हम भी यही सर्व के अनुयायी है

हर सुबह हम ऐसा ही संकल्प और विश्वास से अपना जीवन जीने का निश्चय करते है।

यह श्रेष्ठ मान्यता और स्वीकार्य अपनाये तो चोक्कस यह वायरस नष्ट हो जायेगा।

अपने खुद में सलामती अतूट है

नही सलामती दूसरे का अपनाने में

स्वीकारेंगे तो खुद को संभालेंगे

चाहे कितनी परिक्षा काल ले ले

अपनी रक्षा अपने द्रड विश्वास से निभायेंगे

हे प्रभु ! हम तेरे है

कोरोना कोरोना कोरोना

को रोना को राना को रोना

कोरोना कोरोना कोरोना

कोरो ना कोरो ना कोरो ना

को रोना को रोना को रोना

हाँ !

क्यूँ रोना क्यूँ रोना क्यूँ रोना

संभलना संभलना संभलना

दूर रहना दूर रहना दूर रहना

वरना वरना वरना

रोना को रोना को रोना को

हाँ !

रोको ना रोको ना रोको ना

समझना समझना समझना

डरना डरना डरना

रो कोना रो कोना रो कोना

अपना अपना अपना

खोना खोना खोना

नाना ना नाना ना नाना ना

रोको ना रोको ना रोको ना

हाँ !

रोको ना रोको ना रोको ना

हसना हसना हसना

मुस्कुराना मुस्कुराना मुस्कुराना

को रोना को रोना को रोना

जागना जागना जागना

कोरोना कोरोना कोरोना

हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ

" Vibrant Pushti "

यही है परमात्मा, जो निराले है।

"धर्म " धारण करना

धारण - जो समंदर में है

धारण - जो वनस्पति में है

धारण - जो आकाश में है

धारण - जो धरती में है

धारण - जो सूर्य में है

धारण - जो वायु में है

धारण - जो माँ में है

धारणा - जो प्रेम में है

धारणा - जो सत्य है

धारणा - जो पुरुषार्थी है

यह अपनाना है

यह स्वीकारना है

यह लुटाना है

यह आचरना है

तो हमने धर्म धरा

बाकी तो जो धर्म के आधार पर है

बाकी तो जो धर्म के नाम पर है

वह तो सब वाडा है - संगठन है

वह तो सब संप्रदा है - बंधन है

धर्म कभी बांधता नही है

धर्म कभी नियमों में नही है

धर्म तो स्वतंत्र है

धर्म तो सलामत है

धर्म तो निरपेक्ष है

" Vibrant Pushti "
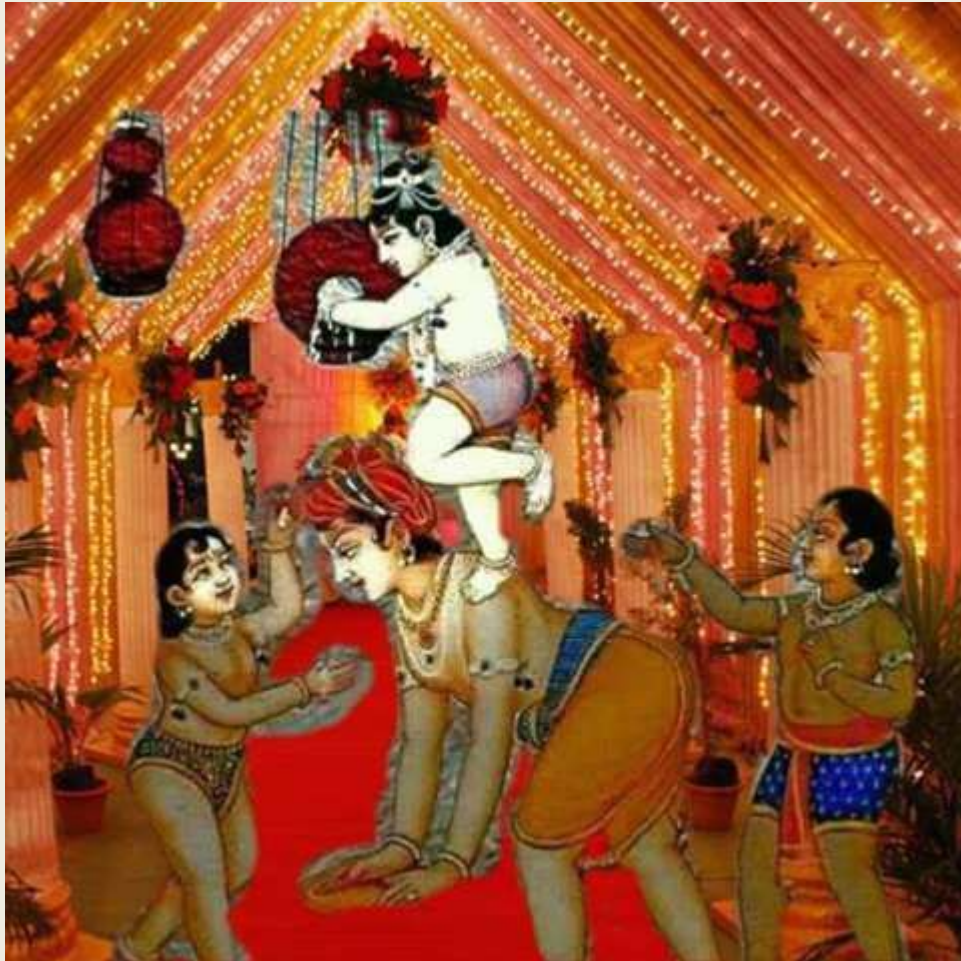
ऐसे ही सबका ख्याल करते है

खुद चोरी - हमारी डोरी उनके हाथ

" आनंद "

ओहहह ! जब से बडा हो रहा हूँ
तबसे एक ही जीवनशैली
सुबह उठना - नित्य कर्म
अर्थोपार्जन - घर लौटना
थोडी घडी थोडा कुटुंबी
थोडा संबंध थोडा समाज
पर आज
सुबह उठना - नित्य कर्म
घर में रहना - कुटुंब साथ
घडी घडी - हर घडी
माँ हरखाई - पत्नी मुस्काई
बेटा हसता - बेटी हसती
साथ जीना - साथ निभाना
हर एक को साथ सहलाना
पौत्र नाचें - पौत्री रंगाये
साथ साथ हर कोई गाये
कीर्तन करें - संगीत सजाये
हर कोई अपनी धून में राचे
सुहाना सुहाना हर कोई सुहाना
मन मोहना अंग अंग गूँजना
वाह ! जीने का यह रंग निराला
हो गया हमारा जीवन उजियारा

" Vibrant Pushti "

"जीवन जीवन "

संस्कार जीवन

संस्कृत जीवन

सुखी जीवन

मधुर जीवन

काल बहाता प्रकृति परिवर्तता

सृष्टि निहारता जगत विचरता

जीते गये संभलते गये संवरते गये

खुद पाया औरों से पाया

द्रष्टि द्रष्टि समझता गया

अपने आपको प्रसारता गया

कहीं साथी कहीं मंझील

साथ साथ निभाता चला

मैंने समझा इन्होंने समझा

उन्होंने समझा अपनो ने समझा

यूं ही पुरुषार्थ करता रहा

मुझ में कुछ कुछ भरता रहा

कदम कदम आगे उठाता गया

कभी बैठा अकेला बैठा

क्या क्या क्या क्या होता गया

आज अकेला एक खुरशी पर

जीवन गुबार टटोलता रहा

क्या क्या किया क्या क्या समझा

जीवन हिसाब मिलाता गया

खुले पलकें होठ खुले

जीवन संगीत गाता रहा

इन्हें सुनाया उन्हें सुनाया

बिता जीवन रटणता रहा

ऐसा जीवन वैसा जीवन

अनुभवों का पाठ पढता रहा

आज भी यही सूर

हर घडी यही सफर

गुनगुनाता हूं सुनाता हूं

हर एक साथ रहता हूं

अपनों के साथ जीता हूं

" Vibrant Pushti "

મિત્રો

ખૂબ મુઝાયા,

નિરાશા નિરાશા નિરાશા

ના ના ના અને ના

ના મુઝાશો, ના નિરાશો

ભલે કાળ આવ્યો

યોગ્યતા અને શ્રેષ્ઠતા પૂર્વક કહું તો

આપણે આવી તક ઝડપીને

એકાંત - તપશ્ચર્યા - ધર્મ અને સ્વને સમજી શકવાની - ઓળખવાની - પામવાની આ તકો છે.

અર્થોપાર્જન એક ક્રિયા છે

જ્યારે આ એક પુરુષાર્થ છે.

ક્રિયામાં લાભ ગેરલાભ બન્ને મળે

પણ

પુરુષાર્થમાં કેવળ સુખ મળે, શાંતિ મળે, ધર્મ મળે, સત્ય મળે અને સ્વ મળે.

જીવનના અનેક ડગો ભરતા આ એકાંત નું ડગ ઘણું શક્તિવર્ધક, ભક્તિવર્ધક અને પ્રેમવર્ધક પામી શકાય છે.

આજનાં આકસ્મિક કાળમાં આ એકાંત આપણને ધૈર્ય અને સરળ બનવામાં ઘણું ઉપયોગી છે.

આપણી ઘણી માન્યતાઓ, વિડંબણાઓ, તકલીફો માં માર્ગ શોધવાની તકો આપે છે.

ના નાસીપાસ થાઓ

ના ઉદ્વેગ દર્શાવો

ના દુ:ખ ઉપજાવો

આપણાં યોગ્ય સિદ્ધાંતો ને ઓળખી આગળ ધપો.

અચૂક કલ્યાણ જ થશે.

" Vibrant Pushti "

" एकादशी "

कितना मधुर शब्द है हमारे शास्त्र का

कितना सूचक शब्द है हमारे जीवन का

कितना सांकेतिक शब्द है हमारी जागृतता का

कितना संस्कृत शब्द है हमारी धर्मता का

कितना उत्तेजित शब्द है हमारी मान्यता का

एकादशी - आज के समय अनुकंपित

एकम - एकता से निभाना है - social distance

द्वितीय - नही लेना है शाकभाजी - फल

तृतीय - हाथ धोना - मास्क पहनना - घर में ही रहना

चतुर्थी - धैर्य रखना - शांत रहना - साथ निभाना - तंदुरुस्त रहना

पंचमी - धर्म सीखना - धार्मिक कार्य करना - धर्म समझना - धर्म सिद्धांत अपनाना - अधर्म का नष्ट करना

षष्ठी - योग्य प्रविष्टि - अज्ञान तुष्टि - श्रेष्ठ गोष्ठी - निखालस मस्ती - संयम कष्टि - अशुद्ध भ्रष्टि

सप्तमी - प्रतियोगीता अहवेलना - प्रसिद्धि टालना - प्रतिद्वन्दि नष्टना - प्रतिशोध मारना - प्रतिदोष नकारना - प्रतिभ्रम छोडना - प्रतिकार त्यागना

अष्टमी - शुद्ध होना - संतोष संवारना - आरोग्य संवर्धनना - दोष निवारना - योग्य आचरना - मौन धरना - स्व संभालना - एकांत जगाना

नवमी - सेवा करना - उपकार करना - प्रेम जताना - वात्सल्य लुटाना - सन्मान धरना - स्व न्योछावरना - संयमता बढाना - निष्कपट खेलना - निष्ठा जगाना

दशमी - दश शीश धरना - दश दिशा समझना - दश दरवाजा रक्षना - दश विद्या सीखना - दश आज्ञा स्वीकरना - दश गान गाना - दश शस्त्र सज्जना - दश नीति अपनाना - दश विधि पूजना - दश नाम स्मरणना

एकादशी - एकत्व होना - दूजत्व तोडना - तृतीय करना - चतुष्टयी

स्वीकारना - पंचतंत्र पहुंचना - षष्ठी वचनना - सप्तम निभाना - अष्टक अपनाना - नवम नूतनना - दशम दीक्षाना - एकादश उजागरना

" Vibrant Pushti "

" हिंदु - सिंधु "

हम क्या है ?

हम क्या कर सकते है ?

हम क्या कर रहे है ?

हम आज कैसे है?

केवल सकारात्मक !

हम हिंदु है - हम सिंधु है

हिंदु का अर्थ है

-जो सदा आध्यात्म है

-जो सदा श्रेष्ठ आत्मा से जुडे है

-जो सदा परम श्रेष्ठ ज्ञानी की आज्ञा से जीते है

-जो सदा परमात्मा को समर्पित है

हाँ ! हम हर पल यही तरहसे यह क्षण - पर क्षण से जीते आ रहे है।

चाहे छोटा सा कोना हो या गगनचुंबी मंदिर हो हम सदा नमन और वंदन में ही जीते है।

चाहे निर्धन हो या तवंगर हो - हर कोई यह कोना या यह गगनचुंबी के सामने समान है - एक है।

हमारी नींव ऐसी सप्त सिंधु से जुडी है - जो सदा पोषण और सिंचन में ही लगे रहे।

जो आज भी सदा यही गुणों से गूँजती है - संवरती है - संगठित है। जो हर हर कुटुंब में जन्मती है।

" Vibrant Pushti "

मित्रों ! कैसी यह विडंबना
हम श्रेष्ठ तो भी हम परछिन्न
हाँ !
युवान - पुख्त - वयस्क - पौढ
शिक्षित - ज्ञानी - व्यवहारिक
तो भी हम लाचार ?
क्यूँ?
कोई कितनी चेष्ठा से हमें विध्वंश करने की कोशिश करे और हम लाचार !
कार्य में - व्यवहार में - समझ में
हर तरह में हम निष्क्रिय !
घडी घडी हर कोई सोचे
न पाये कुछ निकट आसार
क्यूँ ?
कैसी है महामारी !
जो हर कोई गये हार !
हम मनुष्य ! है ही हमारी पास उपाय
हम मनुष्य ! है ही हमारी पास सुलझ
हम मनुष्य ! है ही हमारी पास औषध
हम है हिंदु - हम है सिंधु
हम है सनातन
अचूक है हमारी अंदर उत्कर्ष
प्राथमिक - करें श्रेष्ठ विचार
हममें है कोई उपाय?
इतनी द्रुडता से विचार करे
इतनी गहराई से अध्ययन करे
इतनी योग्यता से चिंतन करे
इतनी तीव्रता से मनोबल धरे
जो एक योग हो जाय
जो एक साधना हो जाय
जो एक तपश्चर्या हो जाय
जो एक प्रार्थना हो जाय
तो अचूक है निष्कर्ष उपाय
जागेगी उर्जा तन मन धन से

मारेगा अग्नि तिनक तिनक शुद्ध स्पंदन से

उठेगी चिनगारी आत्म यज्ञ से

स्फूरेगी श्रुति वैदिक मंत्र से

रस रस औषधि अंग रंग माधुर्य

न रही महामारी न रही दुराचारी

यही ही श्रेष्ठतम उपाय
यही ही सर्वज्ञात उपाय
यही ही संगठन उपाय
यही ही हिंदु धर्म रक्षित उपाय
अर्थात -
श्रेष्ठ विचार
श्रेष्ठ संकल्प
श्रेष्ठ संवर्धन
श्रेष्ठ सर्जन

यही ही है हमारा संस्कार

यही ही है हमारा आध्यात्म

यही ही है हमारा यज्ञ

यही ही है हमारा रामायण - महाभारत

यही ही है हमारा गीता ज्ञान

यही ही है हिन्दुस्थान

" Vibrant Pushti "

मित्रों

आज का दिन जो हम देख रहे है

आज का दिन जो हम जी रहे है

1. हमारा नसीब है
2. हमारा भाग्य है
3. हमारी शिक्षा है
4. हमारी मान्यता है
5. हमारी जीवन पद्धति है
6. हमारी विचारधारा है
7. हमारी मानसिकता है
8. हमारी धार्मिकता है
9. हमारा परिवर्तन है
10. हमारी अज्ञानता है
11. हमारी अधुरपता है
12. हमारा अधिकार है
13. हमारी साक्षरता है
14. हमारी विलासिता है
15. हमारी परंपरा है
16. हमारी विभिन्नता है
17. हमारी अराजकता है
18. हमारी विवादता है
19. हमारी अनुकरणता है
20. हमारी आदत है

गहराई से विचार कर अचूक समझना

" Vibrant Pushti "

निष्कर्ष हो कर मुझे लिख सकते हो

मित्रों

हम भारत के स्वतंत्र नागरिक है

हमारे विचारों से हमें अपना निम्नलिखित विषय पर सूचन अनिवार्य है-जो हमें इच्छित वातावरण प्राप्त हो-आज इतना सुयोग्य वातावरण है अपने देश का-जो हमें सुनते है और विचार करके अमल करते है।

अपने विचार से शिक्षक

अपने विचार से डॉक्टर

अपने विचार से दुकानदार

अपने विचार से घर का मुखिया

अपने विचार से धर्मगुरु

अपने विचार से कामदार

अपने विचार से बालक

अपने विचार से समाज सेवक

अपने विचार से मोहल्ला

मुझे विश्वास है आप अचूक सूचन करेंगे - मेरा WhatsApp 9327297507

" Vibrant Pushti "

लोके स्वास्थ्यं तथा वेदे हरिस्तु न करिष्यति।

पुष्टिमार्गस्थितो यस्मात्साक्षिणो भवताऽखिला: ।।

श्री वल्लभाचार्यजी - अदभुत!

हे आचार्यश्री! आपने श्रेष्ठता से - सैद्धांतिक रूप से मनुष्य जीवन जीने का पथ दीपक प्रज्वलित किया है।

लोके स्वास्थ्यं न करिष्यति

अर्थात

वार्तालाप - वाद संवाद - लोक मान्यता से अपने खुद का स्वास्थ्य औपचारना व्यर्थ है।

आजकल हर पल - हर सूचन - हर विधान स्वास्थ्य आधारित लोक वायका - लोक विचार - लोक विधान - लोक सूचन - लोक मंतव्य आयोजित और आधारित है।

हम अपनी जागृतता - अपना ज्ञान - अपना सामर्थ्य आयोजित और आधारित नही करते है - इसलिये हम रोगी, बिमार, अस्वस्थ और विद्रोही रहते है।

क्यूँकि न तो मानसिकता, शारीरिकता अपने बस में है और रखते है - एक फैशन सा द्रष्टि कोण अपनाते है - कितना बडा अज्ञान और अंधकार !

" Vibrant Pushti "

"वेदे हरिस्तु न करिष्यति "

श्री वल्लभाचार्यजी कितनी सूक्ष्मता से और समयानुसार हमें जागृत करते है -

हम रामायण - महाभारत पढते है, देखते है, गाते है, समजते है ।

पर

समजाते है - कहते है एक ज्ञानी की तरह - निकटता की तरह।

पर

आचरण - व्यापारी तरह

आचरण - आदेश की तरह

आचरण - मोभा की तरह

आचरण - सलाह सूचन की तरह

न खुद अपनाना - औरों को ठोसना

नही नही!

हर आचार्यो ने वेद अपनाया - वेद के सिद्धांत अपनाये - वेद के रचयिता को समझा - वेद की सत्यता पहचानी

पर

वेद के रचयिता बनने की कोशिश न जताई - न जगाई।

आज जगत में

यह व्यक्ति में यह आचार्य है

यह व्यक्ति में यह ऋषिमुनि है

यह व्यक्ति में यह स्वरुप है

बस! यही मान्यता - अंधश्रद्धा हमें विकृत बना देते है -

हमें अवलोकि घड देते है -

हमें अवलंबित कर देते है -

और

हम भटक जाते है

हम अटक जाते है

हम लटक जाते है

आज चारों ओर यही ही है

मंदिर जाये - परिक्रमा जाये

यात्रा जाये - सत्संग जाये

न हम अपने आप से जागृत हो सकते है

हर तरह से आज्ञाकारी -

हर तरह से अवलंबित -

बस पीछे पीछे पीछे पीछे

कैसा अज्ञान का परदा

कैसा अंधकार का साया

कैसा असमर्थता का जीवन

खुद की जागृतता और स्वावलंबन से सोचो

" Vibrant Pushti "

" कोरोना "

क्या हम नही हरा सकते ?

अचूक हरा सकते है इन्हें

अचूक भगा सकते है इन्हें

हाँ ! हममें हिन्दुत्व होगा तो

धैर्य से अध्ययन करे तो हमें हमारी आंतरिक शक्ति और सुरक्षा को पहचान सकते है।

हम हिन्दु - हमारी धरोहर में ऋषिमुनिओं की अगाध उर्जा

हम हिन्दु - हमारी मिट्टी में यज्ञ तपश्चर्या का अदभुत पुरुषार्थ

हम हिन्दु - हमारे जल में चेतनवंत वात्सल्य सभर अमृत धारा - तनु नवत्व

हम हिन्दु - हमारे वायु में सातत्य भरी बलिदान की महक

हम हिन्दु - हमारे आकाश में एकता प्रस्थापित उत्तम संगठनता

हम हिन्दु - हमारे अग्नि में अज्ञान नष्ट करने की प्रज्वलता

आप कहो -

हममें है भक्ति

हममें है शक्ति

हममें है गति

हममें है युक्ति

हममें है मुक्ति

हमारी संस्कृति - संस्कार में श्रेष्ठ सिंचन सिद्धांत जो अपना सामर्थ्य सबल उर्जा से संरक्षण करते है

हमारा पुरुषार्थ - संसार - जगत और दुनिया के हर नकारात्मक को नष्ट करके हर घडी धर्म की संस्थापना करते है

निडर बनो - शुद्ध आचरो

क्या नही हरा सकते है " कोरोना "

यही तो हमारा श्रेष्ठ हिंदुस्थान

" Vibrant Pushti "

" समाज "

समाज का अर्थ है

सम + अज

सम अर्थात समांतर

सम अर्थात समाधान

सम अर्थात संबंध

सम अर्थात समय

सम अर्थात संपर्क

सम अर्थात समक्ष

सम अर्थात संपत्ति

सम अर्थात संप

सम अर्थात संपूर्ण

अज अर्थात अग्रसर

अज अर्थात अजय

अज अर्थात अजन्मा

अज अर्थात अजनि

अज अर्थात अजप

अज अर्थात अजित

यह समाज है - जो सदा अजर अमर है

यही समाज में जीना है

यही समाज में पुरुषार्थी होना है

यही समाज में सुधारक होना है

यही समाज में द्रड होना है

जो सासवत् है

जो सशक्त है

जो सलामत है

जो सर्वज्ञ है

जो सरल है

जो सम द्रष्टि है

जो समीकरण है

जो सम्मानित है

जो समर्थ है

जो समर्पण है

जो सप्रीय है

जो सच्चिदानंद है

जो सत्य है

इसे समाज कहते है

" Vibrant Pushti "

" कोरोना "

जो सदा के लिए आया मेहमान

जो सदा के लिए आया आहवान

जो सदा के लिए आया फरमान

जो सदा के लिए आया हैवान

जो सदा के लिए आया तुफान

जो सदा के लिए आया विघ्न

जो सदा के लिए आया विज्ञान

जो सदा के लिए आया विघटन

जो सदा के लिए आया दुश्मन

जो सदा के लिए आया दर्शन

जो सदा के लिए आया भंजन

हे कोरोना

जो सदा के लिए आया आक्रंद

जो सदा के लिए आया द्वंद

ओ कोरोना

जो सदा के लिए आया रंज

जो सदा के लिए आया तंज

जो सदा के लिए आया व्यंग

ओह कोरोना

जो सदा के लिए आया रंग

जो सदा के लिए आया भंग

जो सदा के लिए आया सुरंग

आह कोरोना

जो सदा के लिए आया जागरण

जो सदा के लिए आया आक्रमण

जो सदा के लिए आया कारण

जो सदा के लिए आया प्रकरण

और और और सदा जीवन में

है यह कोरोना

हर क्षण रहना है जागृत

हर क्षण रहना है आकृत

हर क्षण रहना है सुश्रुत

हर क्षण रहना है विस्तृत

हर क्षण रहना है स्वीकृत

हर क्षण रहना है विभूत

हर क्षण रहना है संस्कृत

हर क्षण रहना है प्रणिपृत

हर क्षण रहना है मुक्त

भयावह कोरोना

हर क्षण रहना है व्याकुल

हर क्षण रहना है प्रतिकूल

भयानक कोरोना

हर क्षण रहना है निष्ठुर

हर क्षण रहना है असुर

हर क्षण रहना है द्वीसुर

हर क्षण रहना है नासूर

है शक्ति हमारी पास - प्रभु स्मरण

है भक्ति हमारी पास - प्रभु अध्ययन

है शक्ति हमारी पास - प्रभु भजन

है भक्ति हमारी पास - प्रभु शरण

है शक्ति हमारी पास - प्रभु चरण

है भक्ति हमारी पास - प्रभु वरण

है शक्ति हमारी पास - प्रभु आवरण

है भक्ति हमारी पास - प्रभु कारण

है शक्ति हमारी पास - प्रभु ज्ञान

है भक्ति हमारी पास - प्रभु ध्यान

हाँ ! नही स्पर्श करता है कोरोना

" Vibrant Pushti "

दूर दूर दूर से दूर
दूरी की दूर
देरी की दूर
खुद की दूर
अपने की दूर
अपनों की दूर
स्वप्नों की दूर
संकल्पों की दूर
निकट की दूर
निर्णय की दूर
निश्चिंत की दूर
दूर कहीं दूर
दूर दूर दूर और दूर
हाँ ! ऐसे है दूर
हाँ ! ऐसे है हमसे दूर
हाँ ! ऐसे ही है कहीं से दूर
कितनी विडंबना है यह दूर
" Vibrant Pushti "

गजब है - गजब है यह संस्कृति

" माता "

हर हिन्दुस्थानी की माताएँ

जन्म धात्री - जन्म माता - मूल माता

पालक माता

राज माता

सौतेली माता

गांव माता

भारत माता

जगत माता

धरती माता

नदी माता

वायु माता

शीतळा माता

धर्म माता

मान्यता माता

शिक्षा माता

सहायक माता

संस्कार माता

संस्कृति माता

विद्या माता

पोषण माता

शक्ति माता

ज्ञान माता

भक्ति माता

परिचारिक माता

भोग माता

योग माता

पवित्र माता

तुलसी माता

शांति माता

गुरु माता

आश्रय माता

आश्रम णाता

अंतरिक्ष माता

वृद्धा माता

कुंवारी माता

संसार माता

आदि ऐसी कितनी माताएँ जो हिन्दुस्थानी इनमें राचता रहता है - जीता रहता है।

सन्मान हर नीति से - हर रीति से

जो सदा अपने बालक को सलामत करे और सहाय करे और वात्सल्य लुटाए

प्रणाम है एसी स्वीकार्य माताएँ

वंदन है एसी सुरक्षा माताएँ

दंटवत है एसी पोषक माताएँ

हमें तो गर्व होना चाहिए कि यह सर्वे माताए...

" Vibrant Pushti "

हमारा इतिहास रहा है कि हम भाव प्रधान की ज्यादा मात्रा में जी रहे है - इतना सर्वश्रेष्ठ ज्ञान हमारें इतिहास में है - जैसे वेद संस्कृति - बौद्ध संस्कृति ।

उन्हें टटोलना अति आवश्यक है।

ऐसे वैसे वैसे ऐसे - ऐसे करते करते हम हर तरह से वो ही अपनाते है जो अपनी धरोहर में है - संस्कृति में है।

तो फिर हम हमारी वेद संस्कृति को ही समझना पहचानना आवश्यक है तो ही हम अपने आपको योग्य और सलामत कर सकते है - बाकी तो है यह अंधेरा - जो न घर के न घाट के सिधे पूरब और पश्चिम की चकाचौंध में।

तो रोगी

तो भोगी

तो वियोगी

तो आरोगी

भावनात्मक से ज्ञानात्मक और

ज्ञानात्मक से ज्ञानाभावत्मक श्रेष्ठ वर्धन है।

" Vibrant Pushti "

"कोरोना - क्यूँ रोना?"

हमें मिटाये हमें हराये

यह रोना में दम नही

कोरोना आये कोई रोना आये

न डगे न भागे न डरे

ऐसा कोई यम नही

खुद सलामत खुद स्वस्थ

खुद सैद्धांतिक खुद निष्कपट

खुद मर्यादित खुद जागतिक

न कोई रोना न कोई डराना

ऐसे संभलना ऐसे संभालना

ऐसे व्यवस्थित ऐसे सज्जित

न कोई छूएं न कोई स्पर्शे

केवल दूरी रखना केवल ख्याल रखना

मरी मसाले लोंग हल्दी

घर घर उपचार बंधाना

अनुभव चिकित्सा पूर्वज शिक्षा

घडी घडी अपनाना

एक ही प्रार्थना है ईश्वर से

सलामत रखे प्रमाणिकता से

सलामत रखे बुराइयों से

सलामत रखे दुर आचार विचार से

हम सलामत कुटुंब सलामत

कुटुंब सलामत समाज सलामत

समाज सलामत राज्य सलामत

राज्य सलामत देश सलामत

सलामत रहे हर देशवासी हमारें

न तुडे न छूटे दोर किसीके जीवन की

यही ही दुआ यही ही इबादत

यही ही प्रार्थना यही ही याचना

" Vibrant Pushti "
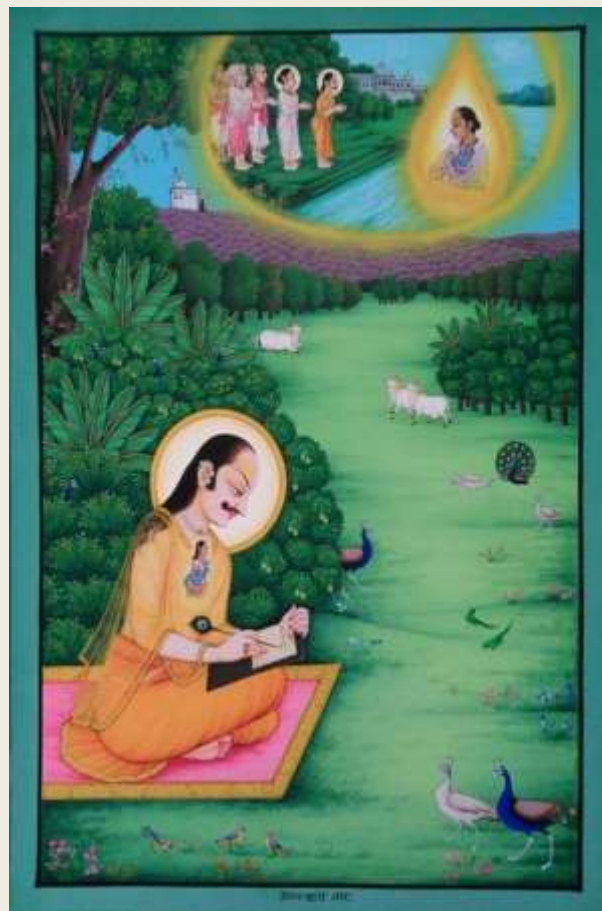
" कृष्णा कृष्णा कृष्ण कृष्ण "

प्यारे कृष्ण न्यारे कृष्ण

जगाये कृष्ण ध्याये कृष्ण

चाहे कृष्ण भाये कृष्ण

कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण

साँवरे कृष्ण बावरे कृष्ण

सहारे कृष्ण संवारे कृष्ण

मेरे कृष्ण तुम्हारे कृष्ण

कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण

द्वारे कृष्ण हारे कृष्ण

निकट कृष्ण दूर कृष्ण

चौटे कृष्ण गृहे कृष्ण

कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण

मन कृष्ण तन कृष्ण

धन कृष्ण जीवन कृष्ण

विचरे कृष्ण विचारे कृष्ण

कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण

" Vibrant Pushti "

हमारा मंत्र

हमारा यंत्र

हमारा तंत्र

हमने अपनाया

हमने सामर्थ्या

हमने उपयोगा

न हार सका

न हट सका

न तुट सका

न भाग सका

न रोक सके

न दूर सके

न मार सके

न नष्ट सके

हम सर्जित वायरस - मानव सर्जित वायरस

क्यूँ?

जगत का इतना बडा मानव समूह

जगत का अनेक जीवों का श्रेष्ठ जीव

जगत की अनेक जीवों की बुद्धिजीवी जीव

जगत के अनेक जीवों पर शासन कर सके ऐसे जीव

जगत के अनेक ज्ञान उपाधि को निचोड सके ऐसे जीव

जगत के तुलनात्मक जीवों में कर्मवीर जीव

वैक्सीन अचूक बनायेंगे

अथाग प्रयत्न करेंगे

ज्ञान पराकाष्ठा निचोडेंगे

पर - हम कैसे?

न अपने आप को संभाल सके !

न अपने आप को समझ सके !

न अपने आप को दोर सके !

न अपने आप को रोक सके !

न अपने आप को सीखा सके !

अभिमान - अहंकार - गर्व

वैमनस्य - अराजकता - दंभ

अपमान - अज्ञान - अलगता

असहिष्णुता - अव्यवस्था - असमानता

न हम छोड सके - न हम तोड सके

न हम ...

" Vibrant Pushti "

गर्व है हम हिन्दुस्थानी है

मन में इतनी शक्ति भरी है की हम कोई भी परेशानी का सकारात्मक आइडिया निकाल सकते है

शरीर में इतनी शक्ति है की हम कितना भी कठिन काम हो वह सही तरीके से निपटा सकते है

बुद्धि में इतनी क्षमता पाई है की कोई भी समस्या हम क्षण भर में इलाज ढूंढ कर समस्या हल कर सकते है

यह धरोहर हमारे संस्कार और संस्कृति में ही भरे है जो हमें ऐसे उपाय पा सकते है।

आपको पता है - यह धरोहर पूरे विश्व में केवल हमारी पास ही है - हाँ !

धैर्य से सोचना - अमेरिका, यूरोप, इंग्लैंड और आरब देशों में ज्यादातर व्यवस्था में हम हिन्दुस्थानी ही आसानी से वह देशों की कहीं समस्याओं संभल सकते है ।

हम बहोत कुछ कर सकते है।

" Vibrant Pushti "

आंखें खोलूं - अमेरिका

मूंह से बोलूं - अमेरिका

कानों से सुनुं - अमेरिका

मन से विचारुं - अमेरिका

कार्य करुं - अमेरिका

हाँ ! जो भी कुछ स्वप्न देखूं तो अमेरिका का

हाँ ! जो भी कुछ करना चाहूँ तो अमेरिका के लिए

सच !

क्या बात है !

आंखों से अमेरिका

मन से अमेरिका

शरीर से अमेरिका

व्यवहार से अमेरिका

अर्थात

हर तरह से अमेरिका

हर रीत से अमेरिका

क्यूँ?

हमारा बचपन हिन्दुस्थानी

हमारी पढाई हिन्दुस्थानी

हमारी कमाई हिन्दुस्थानी

हमारी उंचाई हिन्दुस्थानी

हमारा धर्म हिन्दुस्थानी

फिर भी हम स्वप्न देखें अमेरिका !

क्यूँ ?

मेरे ख्याल से इसका उत्तर तो हर कोई दे पायेंगे।

आपको विनंती करता हूं - आप अचूक लिखें या ऑडियो से कहें mobile number 9327297507

या email करें

vibrantpushti@gmail.com

" Vibrant Pushti "

सवेरा - सांझ

दिन - रात

जो जो उत्तर पाये

वाह ! बहोत ही उमदा !

आज का हिन्दुस्थान हमारा है

न अमेरिका - न युरोप - न इंग्लैंड

केवल मेरा हिन्दुस्थान

हमसे है वर्तमान और भविष्य

श्री पंच आचार्य को पहचाना

रामायण महाभारत को समझा

श्री मद् भगवत गीता को अपनाया

कर्म का सिद्धांत को सिद्ध किया

अंधश्रद्धा तोड कर

मान्यता मरोड कर

अज्ञानता नष्ट कर

प्रणालीका छोड कर

खुद को इतना बुलंद बनाया

विज्ञान में स्नातक

अंतरिक्ष में स्नातक

भूमि में स्नातक

अर्थ व्यवस्था में स्नातक

जीवन में आध्यात्मिक

न कोई अमेरिका

न कोई युरोप

न कोई चीन

केवल हिन्दुस्थान केवल हिन्दुस्थान

यही जन्मभूमि - यही कर्मभूमि

जागे है - जगाते है - घर घर ज्योत प्रकटाते है

" Vibrant Pushti "

जीवन जीते जीते हमनें कहीं रीति, कहीं पद्धति, कहीं धारा, कहीं नीति, कहीं नियम और कहीं विधि सीखें ।

यह सीखते सीखते हम उनके हो गये, उनमें डूब गये, उनमें खो गये, उनमें एकाकार हो गये । जिससे हम जो हो गये वो हो गये।

बस ! यहां से हमारी जीवन शैली, संसारीक्ता, जगत तीता, बंधारणीता, जीवंतीका, जीवंतता बंधाने लगी ।

यह जींवतीका जीवंतता से हमारे संस्कार नियमन, कुटुंब संयोजन, समाज बंधारण और जीवन विकास यात्रा आयोजन निश्चित रूप धारण धरता है ।

बस ! यहां से हम अपनी पहचान बनाते जाते है - जो पहचान से हम कुटुंब - समाज में स्थान पाते है।

यह समाज स्थान से हम देश का बंधारण - देश का वातावरण - देश की संस्कृति सुनिश्चित करते है।

हमारी द्रष्टि, हमारे विचार, हमारे व्यवहार और हमारे आचार यही मीमांसा से घटते है।

आज हम जो है - जो हो रहे है - जो होने वाले है - जो निश्चित कर रहे है उसका ...

" Vibrant Pushti "

" स्वभाव सुधारना "

आजकल का बहुत प्रचलित शब्द

हर कोई कहता रहेगा

हर कोई सुनता रहेगा

हर कोई सोचता रहेगा

हर कोई संभलता रहेगा

क्यूँ?

कितनी भी उम्र कटे

कितने भी अभ्यासुं हो

कितने भी अनुभवी हो

कितने भी मेहनती हो

कितने भी समझु हो

कितने भी ज्ञानी हो

कितने भी प्रमाणिक हो

कितने भी संस्कारी हो

कितने भी सैद्धांतिक हो

कितने भी धर्मी हो

कितने भी उपकारी हो

कितने भी एकजुट हो

कितने भी सहभागी हो

स्वभाव सुधारो - सवभाव बदलो

क्या अर्थ है यह व्याक्य का?

क्या संकेत है यह कहने का?

क्या समझ है यह सुनने का?

सच !

शायद! यह इतना सा व्याक्य पर ही दुनिया चलती है।

शायद! यह इतना सा व्याक्य पर मानव जीते है।

शायद! यह इतना सा व्याक्य पर हर संबंध बंधते है।

शायद! यह इतना सा व्याक्य पर हर व्यवहार होते है।

न कोई एहसास

न कोई मर्यादा

न कोई विश्वास

न कोई आधार

न कोई स्वीकार

कितना अजायब - स्वभाव सुधारना!

" Vibrant Pushti "

हर एक को पता है - खुद क्या है।

हर एक को समझ है - खुद को क्या समझ है।

हर एक को पहचान है - खुद कैसा है।

यही क्या से हम दूसरों का पता करते है।

यही समझ से हम औरों को समझते है।

यही पहचान से हम हर एक को पहचानते है।

पता - समझ - पहचान में एकता हो तो इतना चोक्कस है हम योग्य है।

हमारे नैन - कर्ण - होंठ का हम सही तरह से उपयोग करते है।

पता - समझ - पहचान में एकत्व है तो इतना चोक्कस है हम श्रेष्ठ है।

हमारे मन - तन और समय का सही रीत से निर्देशन करते है।

पता - समझ - पहचान में एकात्म है, तो इतना चोक्कस है हम भगवदीय है अर्थात ज्ञानी और भावुक है।

हमारे चित्त - धर्म - आत्मा का सही गति से पुरुषार्थ कर रहे है।

" Vibrant Pushti "

" स्वयं "

" स्वतंत्र "

" स्वछंद "

" स्वस्थ "

कहींओ ने कितने दसक बिताये

एकाग्रता से - एकांत से - समाधिस्थ से चिंतन किया होगा

हम स्वयं है?

हम स्वतंत्र है?

हम स्वछंद है?

हम स्वस्थ है?

कितने चिंतनीय चरित्रों है

कितने चिंतनीय पुस्तकें है

कितने चिंतनीय संस्कृति है

कितने चिंतनीय राजसत्ता है

कितने चिंतनीय धर्मगुरुओं है

कितने चिंतनीय समाज सुधारक है

कितने चिंतनीय माता पिता है

कहां है हम ?

आकाश कभी भी प्रलयता है

धरती कभी भी मचलती है

वायु कभी भी तुफानता है

सागर कभी भी सुनामता है

सूरज कभी भी प्रचंडता है

क्या ?

क्या कर सकते है हम?

जो आपस में गुमराह करने वाले

जो आपस में झगडने वाले

जो आपस में तोडने वाले

जो आपस में बिखराने वाले

जो आपस में मारने वाले

जो आपस में एक दूजे का व्यापार करने वाले

हाँ ! यही सत्य है

हाँ ! यही धर्म है

हाँ ! यही विज्ञान है

हाँ ! यही हम है

त...

" Vibrant Pushti "

" गंगा दशहरा "

गंगा - पहचानते है

पर

दशहरा जानते है?

दश हरा

दश हरा का अर्थ है दश को हराना

हम दिपावली से प्रथम दशहरा मनाते है

क्यूँकि भगवान श्री राम ने दश मुखडा का वध किया था।

दश मुखडा - दश शिर - दश दशा - दश विद्या - दश अस्त्र शस्त्र को काटा - तोडा - मारा और नष्ट किया।

दश क्या?

अहंकार

मोह

लोभ

अभिमान

क्रोध

द्वेष कपट

राग

माया

अवैध

दुष्ट

हमने इसमें से किसको मारा?

गंगा का प्राकट्य तब ही होता है

बाकी तो मानों तो गंगा

बाकी तो बहता पानी

डूबो या डुबकी लगाओ

न कोई शुद्ध न कोई पवित्र

राम तेरी गंगा मैली हो गई

पापी ओं के पाप धोते धोते

" Vibrant Pushti "

ज़िंदगी की कितनी कहानी है

जो सुख को दु:ख - दु:ख को सुख की पहचानी है

" निर्जला "

निर् + जला

निर् अर्थात पूर्ण

जला - जल + अ

पूर्णता से जल बिना

कौन?

वैज्ञानिक अनुसंधान से प्रमाणित करे तो कोई नही है बिना जल

तो भी हमारी वैदिक संस्कृति में है

" निर्जला "

अवश्य अर्थ है - सार्थकता है - यथार्थता है - कृतार्थता है।

बिना जल से कौन?

बिना जल से वही तत्व जो जल में रहते भी बिना जल

योद्धा भीम पूरा दिन और रात जल में रहते बिना जल

भगवान श्री विष्णु - जो अगाध जल के सागर में तो भी बिना जल

अर्थात - जो जल में होते हुए भी बिना जल वह श्रेष्ठ - वह पूर्ण

जो सदा करुणामय हो

जो सदा कृतज्ञ हो

जो सदा करुणानिधि हो

जो सदा क्षमाशील हो

जो सदा निर्दोष हो

जो सदा पवित्र हो

" Vibrant Pushti "

नाच्यो बहोत गोपाल
अब मैं नाच्यो बहोत गोपाल ।
धन कमायो
जमीन मकान बसायो
बहोत ही किया नाम जग में
नाच्यो बहोत गोपाल
न रहे साथ कोई
दूर दूर पुत्र बहन भाई
नही कोई मित्र नही कोई स्नेही
एक ही केवल मैं
नाच्यो बहोत गोपाल
मंदिर दर्शन दफतर काम
काम न धाम भटक मटक
इधर उधर न समाऊँ कहीं कहीं
एक ही केवल एक
नाच्यो बहोत गोपाल
तीरथ चलु कभी
विदेश भागु कभी कभी
अपने आप को जोडु कहीं कहीं
तो भी हूँ केवल मैं
नाच्यो बहोत गोपाल
नाच्यो बहोत गोपाल
अब मैं नाच्यो बहोत गोपाल ।।
आज की विडंबना
हर कोई की
क्यूँ?
" Vibrant Pushti "

क्या है हममें
मधुर संगीत
मधुर गीत
मधुर महक
मधुर स्वर
मधुर नजर
मधुर मुस्कान
मधुर मुखडा
मधुर अदा
मधुर रुप
मधुर वेण
मधुर स्पर्श
मधुर चुभन
मधुर चंचलता
मधुर नटखटता
मधुर शरणागत
मधुर सुश्रुषा
मधुर संस्कृति
मधुर वंदन
मधुर नमन
मधुर वर्ण
मधुर वान
मधुर स्पंदन
मधुर प्राण
मधुर घ्राण
मधुर ज्ञान
मधुर भाव
मधुर मिलन
मधुर शृंगार
मधुर प्रेरणा
मधुर प्रेम
मधुर प्रियतम
मधुर साथ
मधुर जीवन
मधुर ज्योत

मधुर साँस
मधुर आश
मधुर प्यास
मधुर ख्याल
मधुर संग
मधुर अंग
मधुर रंग
मधुर संकेत
मधुर संकल्प
मधुर शरण
मधुर कृति
मधुर वृत्ति
मधुर स्वरुप
मधुर मधुरता
मधुर युक्त
मधुर हरण
मधुर गान
मधुर बाण
मधुर क्रिया
मधुर अधुरप
मधुर पूर्णता
मधुर तेज
मधुर गति
ओहह ! और मधुराष्टकम्
मधुर मधुर और मधुर है हममें
तो तो हम अचूक पा सकते है
मधुर राधा - मधुर कृष्ण
मधुर अंशी - मधुर परमात्मा
मधुर मधुर से मधुर
कहीं...
" Vibrant Pushti "

" गृह - घर - आवास - निवास "

यह बंधारण जीवन की श्रेष्ठ सच्चाई और कर्म का फल है जो हम क्या है?

हमारी सभ्यता क्या है?

हमारा धर्म क्या है?

हमारा हेतु क्या है?

हमारी सार्थकता है?

हमारी यथार्थता क्या है?

हमारी कृतार्थता क्या है?

चार दिवार और उपर छत

बहोत कुछ है।

इनकी नींव क्या क्या समझाती है।

इनके रंग क्या क्या उमंग बिखराती है।

इनके खंड क्या क्या आयोजन संकेतती है।

इनके हर मझला क्या क्या उपलब्धि जताती है।

इनका भूमितल क्या क्या पुरुषार्थ पुकारते है।

हम रहते है - हम जीते है - हम अपना वास करते है - हम हमारा कार्य जगाते है।

हमारे जीवन का सर्वोच्च स्थान है, जो जन्म जीवन और हमारी श्रेष्ठ पहचान है।

हमारे हर कर्मो की निशानी है।

हमारे हर संस्कार की यज्ञशाला है।

हे हिन्दु संस्कृति! सत सत नमन

हमें तु कभी न भुलाना

" Vibrant Pushti "

" स्नान यात्रा "
आज स्नान यात्रा का उत्सव मनाया गया।
स्नान यात्रा का माहात्म्य और भूमिका कह सकते है कोई ?
" स्नान यात्रा "
स्नान - कहीं अर्थ होते है
यह अर्थ यह शब्द के साथ जुडा हुआ शब्द के अनुसंधान से स्नान का सही अर्थ और योग्यता समझ सकते है।
" स्नान यात्रा "
स्नान के लिए यात्रा
या
यात्रा के लिए स्नान
या
स्नान की ही यात्रा
यहां स्नान यात्रा का मूल हेतु
स्नान करवाने के हेतु यात्रा
कौन स्नान करवाता है?
किसे स्नान करवाते है?
क्यूँ स्नान करवाते है?
क्यूँ यात्रा आयोजित स्नान करवाते है?
अर्थात
यहां स्नान अर्थात अभिषेक
जल से अभिषेक
जल - कोनसा जल?
जल - कैसा जल?
हिंदु संस्कृति में जल अभिषेक
श्रेष्ठ क्रिया समझी जाती है
श्रेष्ठ मान्यता मानी जाती है
श्रेष्ठ परंपरा चरित्र की जाती है
जो हर सेवा, यज्ञ, अनुष्ठान या धर्म सहीत क्रिया से बंधित है।
" स्नान " अर्थात शुद्धि और पवित्रता
पर यहां हेतु सभर - न शुद्धि और न पवित्रता है।
क्यूँकि जो हेतु में साध्य शुद्ध ही है, पवित्र भी है।
तो स्नान क्यूँ?
अर्थात
हेतु अलग और मान्यता सभर है, अथवा परंपरिकृत है।

समझना अति आवश्यक है।
यहां जो यात्रा का आयोजन सैद्धांतिक आधारित उत्सव के रूप में प्रायोजित किया है।
जो जल यह तिथि तक है वह सास्वत जल है - जो जल से यह वर्ष का हमारा निर्वाह हुआ, इसके बाद का जो जल बरसेगा वह नया जल बारिश से सम्मलित होगा।
दूसरा जो जल से अभीतक आपने जो हमारा निर्वाह और रक्षण किया वही जल में जो नया जल सम्मलित होगा उनका हम श्रेष्ठ आयोजन करके खेती, वनस्पतियां, पशु पंखीओ का हम श्रेष्ठता से पालन पोषण और रक्षण करेंगे।
जो जल की यात्रा का आयोजन करते है वह हमारी शुद्धता, पवित्रता और निष्ठा का प्रतिक है ।
जो हमने आपके आशीर्वाद और प्रेम से हमें सिंचा...
" Vibrant Pushti "

" महाभारत "

महा + भारत

महा - महान

महा - विशाल

महा - अधिक

महा - श्रेष्ठ

महा - विशेष

महा - असाधारण

भारत - भ + अ +र +त

भ अर्थात भंजन

भ अर्थात भजन

भ अर्थात भक्ति

भ अर्थात भगवत

भ अर्थात भद्र

भ अर्थात भव्य

भ अर्थात भाग्य

भ अर्थात भुवन

भ अर्थात भूषण

अ - अद्वैत

अ - अखंड

अ - अटल

अ - अदभुत

अ - अनन्य

अ - अपनापन

अ - अमृत

अ - अलौकिक

र अर्थात रंग

र अर्थात रस

र अर्थात राम

र अर्थात रक्षा

र अर्थात रथ

र अर्थात रब

र अर्थात रत्न

त - तट

त - तन

त - तप

त - तय

त - तह

त शिष्ट वाचक संज्ञा भी है।

यह है भारत

है उनसे महाभारत

" Vibrant Pushti "

नष्ट ही होता है - क्या?

अंधकार

अहंता

अंधश्रद्धा

अहंकार

अहम

अंधविश्वास

अर्धसत्य

तन

शरीर

समय

धन

मिलकत

अन्न

व्यभिचार

क्रिया

माया

पाप

जूठ

असत्य

दु:ख

कष्ट

सुख

काम

क्रोध

मोह

लोभ

रुप

रंग

शृंगार

जन्म

बचपन

युवानी

वृद्धता

बुद्धि

वृद्धि

युक्ति

आयुष्य

ऋण

संकट

संबंध

वंश

बंधन

वचन

इर्ष्या

संदेह

संशय

प्रतिष्ठा

प्रतिशोध

वैर

द्वेष

आशीर्वाद

संकल्प

स्वास्थ्य

स्वप्न

तुक्के

राग

दुष्कर्म

दुष्टता

धृष्टता

कपट

अभिमान

मान्यता

मान

सम्मान

तृष्णा

अशुद्धता

अंश

अधिकार

आकार

व्यवहार

क्यूँकि नष्ट होने के लिए ही यह उदभवते है।

तो भी हम

उन्हें नष्ट न होने के लिए कितनी मेहनत करते है - दौडते भागते रहते है - अपनाते रहते है - पालते रहते है - पोषते रहते है।

क्यूँ?

" Vibrant Pushti "

कितना श्रेष्ठ है हर मनुष्य जीव के नाम
हर नाम का श्रेष्ठ अर्थ
हर अर्थ में सिद्धांत
हर सिद्धांत में सार्थकता
हर सार्थकता में यथार्थता
हर यथार्थता में शक्ति
हर शक्ति में पुरुषार्थ
हर पुरुषार्थ से भक्ति
हर भक्ति से ज्ञान भाव
हर ज्ञान भाव में प्रेम
हर प्रेम में समर्पणता
हर समर्पणता में आनंद
हर आनंद में परमानंद
ओहह ! हर नाम में परमानंद
सच ! मेरा नाम जो है
उनसे परमानंद
उससे परमानंद
तो तो मेरा रुप आनंद
मेरा स्वरुप आनंद
मेरा अंतर रुप आनंद
मेरा मन आनंद
मेरा तन आनंद
मेरा धन आनंद
मेरा जीवन आनंद
मैं आनंद
मैं परमानंद

" Vibrant Pushti "

"अग्नि: चकार तत्व अर्थ दीपम् भागवते महत् "

हमारे ऋषिमुनिओं ने अपने आपको इतना तक योग्य शिक्षित किया था कि

पंच महा तत्वों अग्नि, जल, वायु, आकाश और पृथ्वी यह पांचों को अपने पुरुषार्थ चाहा योग्यता पूर्वक उपयोग कराते थे और करते थे - अर्थात अपने स्व सामर्थ्य में कर सकते थे।

"अग्नि: चकार तत्व अर्थ दीपम् भागवते महत् "।

श्री वल्लभाचार्यजी कितनी श्रेष्ठता से श्री मद् भागवत की यथार्थता समझाते है

श्री मद् भागवत एक ऐसी उत्तम रचना है जो जीवन के हर क्षण वह दीपक के भाती प्रज्वलता प्रज्वलता मनुष्य जीवन को आनंद ही अनुभूत ता है - जीवन को मधुर ही बनाता है।

श्री मद् भागवत के ज्ञान भाव के दीपक से जीवन में उठती हर परिस्थितीयां को श्रेष्ठता अर्पित करके मनुष्य का मन, चित्त, अहंकार और वृत्ति को संस्कृत करके जीवन पथ को उज्ज्वलता प्रदान करता है।

अर्थात श्री मद् भागवत के हर सं...

" Vibrant Pushti "

सुबह पढता हूँ - लिखता हूँ - सोचता हूँ और समय सारणी आधारित कार्य करता हूँ।

कभी फोन, कभी टेलीविजन, कभी कम्प्यूटर, कभी रेडियो पर कुछ देखता, कुछ सुनता और कुछ समझता कार्य करता रहता हूँ।

समय सारणी के समय अनुसार ओफिस या बिजनेस कार्य में डूबता हूँ - बिच में यही मोबाइल, यही कम्प्यूटर से कार्य रत रहता हूँ।

कहीं बातें, कहीं सूचनें, कहीं सुझाव, कहीं सिस्टम और कहीं निर्णयों से शाम को घर लौटता हूँ।

फिर वही मोबाइल, वही टेलीविजन, वही रेडियो, वहीं थोडा घर विक्री में डूबा निंद में खुद को लपेटता हूँ।

कभी कहीं, कभी दर्शन, कभी गार्डन, कभी नदी किनारे, कभी पर्वतीय क्षेत्र, कभी कोई पर्यटन स्थल जाता रहता हूँ।

बस यूँ ही दिन रात, माह वर्ष और जिंदगी पसार -

अधिक से अधिक हमारी जैसा ही जीते है । यही ही जीवन जीने की रीत है - जीवन जीने की सरलता है - और क्या?

बस ! यही..........

" Vibrant Pushti "

कृष्ण कृष्ण कृष्ण

कृष्ण कृष्ण कृष्ण

गोप गोपी की गूँज जो उठे

गौ गोवर्धन की धूल जो बिखरे

मैं आत्मराम गूँज गूँज सुने

मैं गोमानव धूल धूल छू ले

तेरा हो जाऊँ

हे कृष्ण ! प्रीत में लूट जाऊँ

कृष्ण कृष्ण कृष्ण

कृष्ण कृष्ण कृष्ण

यमुना नीर की बूँद जो बरसे

गोकुल की गली जो पुकारे

मैं आत्मराम बूँद बूँद पाऊँ

मैं जीवमानव गली गली भटकुँ

सखा हो जाऊँ

हे कृष्ण ! लीला में खो जाऊँ

कृष्ण कृष्ण कृष्ण

कृष्ण कृष्ण कृष्ण

" Vibrant Pushti "

" जन्म "

अंकुर - उत्स - स्फूर - आविर्भाव - प्रार्दुभाव - उभार - उद् - सत्

हम भी है

बस

यही ही हमें जानना है

यही ही हमें समझना है

यही ही हमें संस्कृतना है

यही ही हमें संस्कारना है

यही ही हमें संस्थापना है

राम - यही है

कृष्ण - यही है

बुद्ध - यही है

वेद व्यास - यही है

जो हममें से एक है

जो हममें से ही है

जो हममें है

यही ही सूर्य है

यही ही धरती है

यही ही नदी है

यही ही प्रेम है

यही ही सत्य है

" Vibrant Pushti "

योगिनी की हर रीत निराली

घडी घडी निहाले कृष्ण मुरारी

नैन उठायें तो नजर लडाये

नैन झुकाये तो ध्यान चुराये

अधर पुकारे तो सामने आये

अधर बंधे तो मुस्कान लहराये

हाथ बढाये तो पकडने धाये

हाथ रख्खे तो नाच रचाये

डग भरे तो साथ निभाये

डग रुके तो लकुटी बंधाये

कैसो कैसो खेल खेलाये

न चैन रहाये न घडी बिसराये

नटखट अपनी लीला रचाये

घट घट नीत मुझे तरसाये

हे छेलैया! हे खेवैया

क्यूँ पल पल मुझे सताये

" Vibrant Pushti "

श्री वल्लभ पुष्टि षोडश ग्रंथ पठो

अष्टसखा स्पंदन स्पर्श कीर्तन गाओ

श्री यमुनाजी प्रीत बूँद आचमनो

चौरासी वैष्णव चरित्र समझनो

श्री गिरिराज रज चरण परिक्रमाओ

वल्लभ बैठक झारीजी भराओ

क्षण क्षण स्मरण पुष्टि उर्जा जगाओ

मन तन धन जीवन पुष्टि रंग बिखराओ

यही है द्रष्टि

यही है पुष्टि

यही है सृष्टि

" Vibrant Pushti "

फूल खिल जाऊँगा तेरे चरण की रज के लिए

कीर्तन बद्ध जाऊँगा तेरे अधर स्वर छूने लिए

काजल रंग थामूँगा तेरे कजरारे नैन के लिए

बंसरी योनि पाऊँगा तेरे अधर रस चुसने के लिए

साँस धागा निरुपाऊँगा तेरे आचल छाँव के लिए

संसार विष घोलुँगा तेरे नाम स्मरण के लिए

जन्म जन्म लुटाऊँगा तेरे पुरुषार्थ निभाने के लिए

प्रीत प्रेम झुरुँगा तेरे विरह रस पीने के लिए

सच कृष्ण! तु क्या क्या करे

सच कृष्ण! तु क्या क्या है

मैं हर क्या क्या

मैं हर " है " में डूबता रहूँगा डूबता रहूँगा डूबता रहूँगा

" Vibrant Pushti "

ग्रहण - जो सदा नुकसान ही पहुँचाता है

चाहे कैसा भी हो ग्रहण

अर्थात - जीवन में कहीं प्रकार के ग्रहण हमसे और औरों से है

सर्व ग्रहण हानी कारक है

न किसीको ग्रहे

सदा जागृत रहे न कोई हमें ग्रहे

भौगोलिक ग्रहण

सामाजिक ग्रहण

कौटुंबिक ग्रहण

आर्थिक ग्रहण

हम मनुष्य इतनी समझ पर तो पहुंचे ही है - न ग्रहना

आज के ग्रहण से हमनें जितना भी माध्यमों से समझा

अब अपने आपका मनोमंथन करके ग्रहण से दूर और छुटकारा पाने के लिए अपने आपको इतनी योग्यता से तैयार करो

-हर ग्रहण टल जाय

-आये तो भी संभल कर नष्ट कर दिया जाय

-योग्य आचरण से दूर कर दिया जाय।

यही ही हमारी साक्षरता है।

" Vibrant Pushti "

" रथ यात्रा "

हे मन रुपी रथ सदा सत्य का सिद्धांत का आचरण करके योग्यता से चलना

हे तन रुपी रथ सदा तनु नवत्व का सिद्धांत अपनाकर श्रमबिंदु उत्पन्न करना

हे धन अर्थात बुद्धि रुपी रथ सदा पुष्टि दिशा का सिद्धांत स्वीकार कर पुष्टिमार्ग पर चलना

हे जीवन रुपी रथ सदा दूरित का क्षय करने का सिद्धांत अपनाकर पुरुषार्थ सिद्ध करना

यही ही मेरी रथयात्रा

" Vibrant Pushti "

वल्लभ तु एक ही सहारा

वल्लभ तु एक ही आसरा

वल्लभ तु एक ही मेरा

वल्लभ तु एक ही चारा

हर हर द्रष्टि में तु बसा

हर हर सृष्टि में तु वृषा

हर हर यष्टि में तु अमिषा

हर हर पुष्टि में तु उर्जिसा

वल्लभ तु एक ही सहारा

वल्लभ तु एक ही आसरा

वल्लभ तु एक ही मेरा

वल्लभ तु एक ही चारा

नजर नजर में तु वल्लभ

विचार विचार में तु वल्लभ

आचार आचार में तु वल्लभ

व्यवहार व्यवहार में तु वल्लभ

वल्लभ तु एक ही सहारा

वल्लभ तु एक ही आसरा

वल्लभ तु एक ही मेरा

वल्लभ तु एक ही चारा

वल्लभ वल्लभ ओ वल्लभ!

वल्लभ वल्लभ हे वल्लभ!

वल्लभ वल्लभ श्री वल्लभ!

पुष्टि वल्लभ श्री वल्लभ!

" Vibrant Pushti "

जितने जितने निकट जाने की कोशिश

इतने इतने दूर ले जाना - **यह जीवन**

जितने जितने सत्कार करने की कोशिश

इतने इतने नफरत जगाना - **यह जीवन**

जितने जितने सत्य बोलने की कोशिश

इतने इतने झूठ का प्रमाण सिद्धना - **यह जीवन**

जितने जितने विश्वास बांधने की कोशिश

इतने इतने अविश्वास में डूबना - **यह जीवन**

जितने जितने बार सत्य सिद्धांत की कोशिश

इतने इतने नीचे धकेलना - **यह जीवन**

जितने जितने सुख पाने की कोशिश

इतने इतने इमान बेचना - **यह जीवन**

जितने जितने दोस्त बढाने की कोशिश

इतने इतने बेवफा होना - **यह जीवन**

जितने जितने साथ रहने की कोशिश

इतने इतने हथकंडे अपनाना - **यह जीवन**

जितने जितने को कुछ योग्य कहने की कोशिश

इतने इतने को अज्ञात समझना - **यह जीवन**

जितने जितने को विद्या समझाने की कोशिश

इतने इतने आडंबर धरना - **यह जीवन**

मौन रहना - चूप रहना - अपने आप में रहना - अकेले रहना - एकांत में रहना - सहते रह...

" Vibrant Pushti "

अंतरिक्ष का अभ्यास करते करते हमने पाया कि हम इतने निश्चित अनंत ब्रह्मांड में एक छोटे से हिस्से पर एक छोटे से देश में एक छोटे से राज्य के एक छोटे शे शहर में एक छोटे से विस्तार में एक छोटे से कसबा में एक छोटे से स्थली पर एक छोटे से चौराहे के पास एक छोटी सी गली के एक छोटे से कोने में हमारा कहीं घरों में एक घर में हम रहते है।

अब सोचे कि हम एक छोटे से घर से अनंत अंतरिक्ष तक उडान भरते है

हमारी साथ असंख्यों कि भी उडान है

क्या यही उडान हमारे अहंकार को नष्ट करने के लिए काफी नही है?

क्या यही उडान हमारे अभिमान को मारने के लिए काफी नही है?

क्या यही उडान हमारे अहम को हराने के लिए काफी नही है?

अहंकार - अभिमान - अहम

इससे ही जीवन जीते जीते सर्वनाश करते करते हम नही जीते है?

हम अपने आप को मारते मारते हर एक का नष्ट करते करते हम क्या पाते है?

हमारे आंगन की रज का ...

" Vibrant Pushti "

कहो जी तुम क्या कहोंगे ?

दूर दूर और दूर

दूर दूर और दूर तक

हम पढे - हम समझे - हमने अपनाये कोई कोई चरित्र के गुण

ऐसे जीते जीते हम बडे होते गए - संसार जुडते गए - कुटुंब बढाते गए।

यह बढते बढते कहीं अपने गुण - कहीं अपनाये गुण अपने वारसदारों को सिंचते गए, यूँ ही जीवन गुजरते गए - आनंद पाते गए - बस यही जीवन घट माळ - यही जीवन आधार - यही जीवन विस्तार। ऐसी गति जीवन की बस यही ही समय धार।

यही है जन्म - जीवन - जगत?

नही नही कुछ तो है?

हाँ ! चोक्कस कुछ तो है?

चोक्कस कुछ तो है ?

निरोगी हो कर जन्म धरे - **रोगी हो कर मरे**

निर्मोही हो कर जन्म धरे - **मोहित हो कर मरे**

अन्जाने हो कर जन्म धरे - **जान जान कर मरे**

निरपेक्षित हो कर जन्म धरे - **अपेक्षित हो कर मरे**

धर्म की आड से जीते जीते - **धर्म की मान्यता से मरे**

सच ! कैसे है फेरे जीवन के जन्म जन्म भूले

नही नही कुछ तो है?

" Vibrant Pushti "

नही समय हमें तकलीफ देता है

नही प्रकृति हमें हैरान करती है

नही सृष्टि हमें नासीपास करती है

नही शिक्षा हमें बरबाद करती है

नही संस्कार हमें ध्रुष्ट करते है

नही संस्कृति हमें नष्ट करती है

नही सिद्धांत हमारा अनिष्ट करता है

नही मूलत्व हमें कष्ट देता है

नही सत्यता हमें दु:ख देती है

नही धर्म हमें अज्ञान करता है

नही पुरुषार्थ हमें असुरक्षित करता है

नही अनुभव हमें मूर्ख बना सकता है

नही मन हमें अहंकारी करता है

नही तन हमें रोगी बनाता है

नही धन हमें भिक्षुक बनाता है

नही जीवन हमें मायावी बना सकता है

हाँ ! यह ही हमारा विज्ञान है

हाँ ! यह ही हमारा प्रज्ञान है

हाँ ! यह ही हमारा सज्ञान है

" Vibrant Pushti "

मुझे समझ नहीं आता है कि

"मैं सलामत क्यूँ नहीं रह सकता ?"

"मैं सलामत क्यूँ नहीं हूँ ?"

सुबह से उठ कर शाम तक

बस यही ही पडोजण

शाम से घर में रह कर सुबह तक

बस यही ही आयोजन

"मैं सलामत कैसे रहूँ ?"

बचपन अब मोबाइल के साथ

बचपन अब घरेलू मन मनामणा भरे

थोडे बडे स्कूल पढाई के बोज पर

किट किट में साथ जीने की कोशिशें

थोडे बडे कोलेज के अर्थहीन शिक्षा रास्ते

अटक भटक के जीवन स्नातक भये

तलाश विकास नाशक समय दौडाते गये

पाने की आश किसीसे आगे की प्यास

भटकते भटकते घुमाते घुमाते लटकते गये

कुछ कुछ अर्थोपार्जन लुढकते गये

यू ही जवानी में शादी से बसते गये

न कोई दशा न कोई दिशा न कोई निशाना

बस मन में आया ऐसे जीना चलते गये

मन रोग तन रोग धन रोग जीवन रोग अपनाते गये

खुद चिकित्सक आसपास चिकित्सक आजमाते गये

आया घडपण भवाई जवानी की औषधि पीते गये

न कुछ किया बहोत कुछ घवाया

सोच सोच क...

" Vibrant Pushti "

" मनुष्य उत्थान ऐकादशी "

कितना शुभ दिन आयो

कितना मधुर दिन आयो

कितना सुहाना दिन आयो

कितना आनंद दिन आयो

पल पल हमें जुडना है श्री प्रभु के साथ

पल पल हमें स्मरण में रहना है श्री प्रभु के नाम

पल पल हमें सेवा करनी है श्री प्रभु के लिए

पल पल हमें यज्ञ आयोजन धरना है श्री प्रभु के काम

पल पल हमें आराधना करनी है श्री प्रभु के गान

पल पल हमें विनंती करनी है श्री प्रभु पधारे हमारे धाम

वाह ! वाह ! वाह !

" Vibrant Pushti "

" चेतन "

" चेतना "

" चैतन्य "

" चैत्र "

" चैत्य "

" चैतत्य "

" चित्त "

" चरित्र "

" चारित्र्य "

" चतुष्टयी "

हमारी आध्यात्मिक संस्कृति की धरोहर - ही समझना है - स्वीकारना है - अपनाना है - साक्षातना है।

हर एक में चेतन

हर एक में चेतना

हर एक में चैतन्य

हर एक में चैत्र

हर एक में चैत्य

हर एक में चैतत्य

हर एक में चित्त

हर एक में चरित्र

हर एक में चारित्र्य

हर एक में चतुष्टयी

ओहह ! कितना सर्वोत्तम

ओहह ! कितना श्रेष्ठ

ओहह ! कितना महान

ओहह ! कितना अपरोक्ष

ओहह ! कितना निरपेक्ष

ओहह ! कितना ज्ञेय

ओहह ! कितना विज्ञान

ओहह ! कितना प्रज्ञान

ओहह ! कितना सज्ञान

न भौतिकता

न आधुनिकता

न वैश्विकता

केवल वास्तविकता, व्यापकता, विराटता

केवल प्रियता, वात्सल्यता

केवल वैज्ञानिक, वैष्णविक

केवल आत्मीयता, आध्यात्मिकता

यही ही सत्य है

यही ही आत्मा है

यही ही परमात्मा है

यही ही स्वराट आत्मा है

यही ही स्व है

यही ही सर्वानंद है

यही ही सर्वज्ञ है

यही ही सर्वथा है

यही ही सर्वत्र है

हे परम श्रेष्ठ आचार्य !

आपको नमन करता हूँ

आपको प्रणाम करता हूँ

आपको वंदन करता हूँ

" Vibrant Pushti "

" चातुर्मास "

चतुर्थ

चौथ

चातुर्य

चतुष्ट

चतुर्वेदी

हमारी संस्कार और संस्कृति को सिंचन करने के लिए श्रेष्ठ पद्धति है।

काम - क्रोध - लोभ और मोह

चारों अहंकार को संयमित - समान करते करते सलामत रखना यही शिक्षा चातुर्मास में सिंचित करनी है।

दृष्टि से निष्कामता

कर्ण से निष्कटुता

होठ से निष्वचनता

मन से निष्कपटता

तन से निष्व्यवहारता

धन से निष्बुद्धता

हम अवश्य अपने आपको श्रेष्ठता प्रदान करेंगे

जो हमारा जन्म उदेश्य है ।

" Vibrant Pushti "

समय अविरत बहता रहता है

ऐसे हमारी सांसे, जन्म और जीवन।

यही बहती धाराओं

यही सूर्य - यही धरती - यही आकाश - यही सागर - यही वायु मंडलों में विचरती रहती है - जो हमसे है।

यही सांसे, यही जन्म, यही जीवन के हर क्षण के कर्म की असर कहीं तो इकठ्ठी हो कर घुमती रहती होगी।

यह परिबलो जन्म जन्म के हमें बार बार जो गलत किया हो उनके सुधार के लिए संकेत करते है, यही परिबलो जन्म जन्म के बार बार जो सही किया हो उनसे श्रेष्ठ गति पाने के लिए जागृत करते रहते है।

आज जो जो समय के बहाव में जो जो असर से हम जीते है वह समय का बहाव में संकेत ही है कि हमें कैसे जी रहे है और हममें क्या क्या जागृतता धरनी है?

न्याय - अन्याय

प्रेम - द्वेष

निष्कपट - कपट

विश्वास - इर्ष्या

समानता - असमानता

अखंडता - खंडता

उच - निच

आदि असरो हमें अपने आपको समृद्ध या पायमाल करती है।

सोच लें !

" Vibrant Pushti "

" गुरु पूर्णिमा "

भगवान कृष्ण

भगवान बुद्ध

भगवान दत्तात्रेय

भगवान वेद व्यास

गुरु शिखा के भगवान

जो स्मरण करते ही कुछ विद्ये

श्रेष्ठ संस्कार के संस्थापक

श्रेष्ठ संस्कृति के संवर्धक

श्रेष्ठ जीवन के प्रकाशक

श्रेष्ठ गति के संचालक

श्रेष्ठ मति के विकासक

श्रेष्ठ नीति के संवाहक

श्रेष्ठ रीति के संपालक

जो ब्रह्मांड को पवित्र करे

जो जगत को विशुद्ध करे

जो सृष्टि को तेजोमय करे

जो प्रकृति को सैद्धांतिक करे

जो पृथ्वी को कष्टनष्ट करे

जो संसार को प्रेममय करे

जो जीव को भक्तत्व करे

हे गुरु श्रेष्ठ आपको हमारा

दंडवत प्रणाम

शत शत नमन

समस्त वंदन

हमारा अधिकार स्वीकार करो

" Vibrant Pushti "
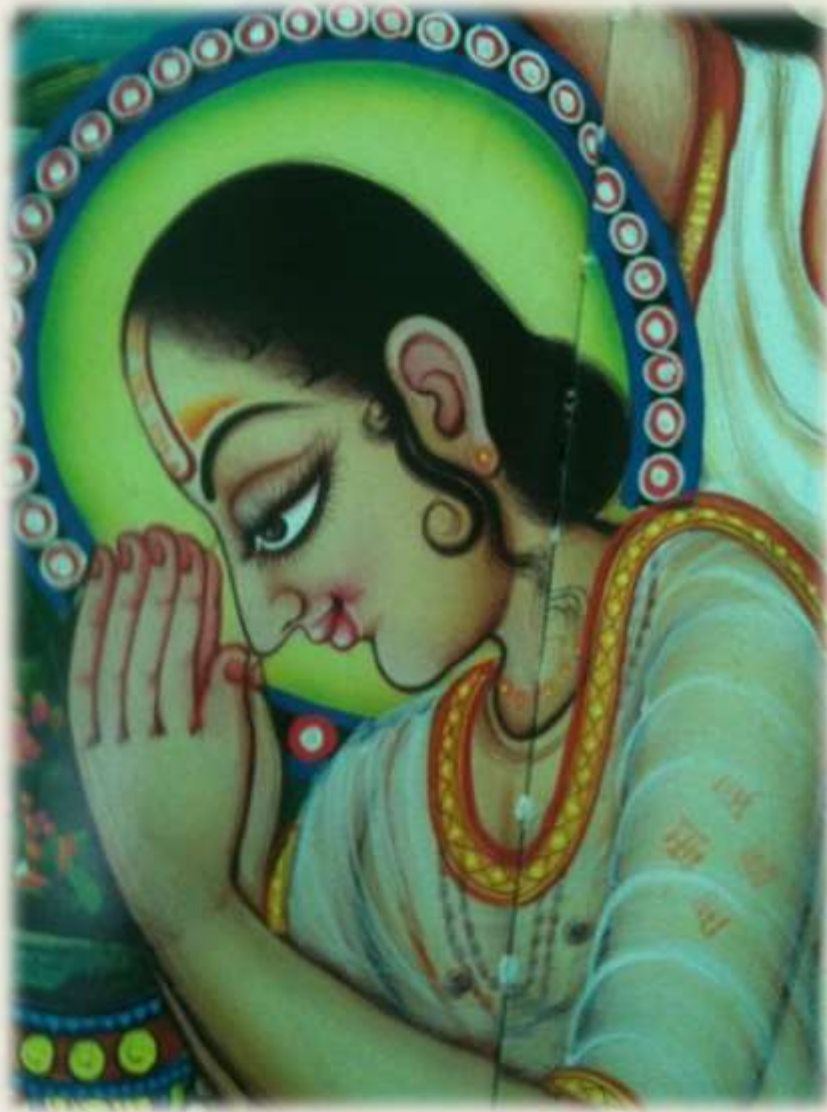
सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - कोरोना

"Vibrant Pushti"

Inspiration of vibration creating by experience of

life, environment, real situation and fundamental elements

"Vibrant Pushti"

53, Subhash Park, Sangam Char Rasta

Harni Road, City: Vadodara - 390006

State: Gujarat, Country: India

Email: vibrantpushti@gmail.com

" जय श्री कृष्ण "